



200% बढ़ जाता है सर्दियों में हार्ट अटैक का खतरा

आज हम आपको बताएंगे कि ठंड में दिल का दौरा क्यों पड़ता है और सबसे जरूरी बात—

नो 5 जानलेवा भारतीय फूड्स कौन से हैं? जिनसे आपको इस मौसम में तुरंत बचना चाहिए! सर्दी का मौसम आते ही हम गरमागरम पकवानों और रजाई के आराम में खो जाते हैं, लेकिन क्या आप जानते हैं कि यही मौसम आपके दिल के लिए सबसे खतरनाक हो सकता है? डॉक्टर्स बताते हैं कि ठंड के महीनों में सर्दियों में हार्ट अटैक का खतरा 200 फीसदी तक बढ़ जाता है! यह एक चौंकाने वाला आंकड़ा है, जिसके पीछे कई कारण हैं। आज हम आपको बताएंगे कि ठंड में दिल का दौरा क्यों पड़ता है, और सबसे जरूरी बात—

नो 5 जानलेवा Indian Foods कौन से हैं, जिनसे आपको इस मौसम में तुरंत बचना चाहिए!

क्यों बढ़ जाता है सर्दियों में हार्ट अटैक का खतरा? सर्दियों में दिल पर दबाव कई गुना बढ़ जाता है। इसके मुख्य कारण हैं: रक्त वाहिकाओं का सिकुड़ना (Blood Vessel Constriction): जब बाहर का तापमान गिरता है, तो शरीर अपने मुख्य अंगों को गर्म रखने के लिए रक्त वाहिकाओं (Blood Vessels) को सिकोड़ लेता है। इससे ब्लड प्रेशर (रक्तचाप) बढ़ जाता है।

खून का गाढ़ा होना (Thickening of Blood): ठंड में खून थोड़ा गाढ़ा हो जाता है, जिससे दिल को इसे पंप करने में



ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है। विटामिन-डी की कमी: धूप कम मिलने से विटामिन-डी का स्तर गिरता है, जो सीधे तौर पर दिल की सेहत को प्रभावित करता है। इन सभी कारणों से दिल के दौरों का जोखिम कई गुना बढ़ जाता है।

5 जानलेवा भारतीय फूड्स जिनसे जब बाहर का तापमान गिरता है, तो शरीर अपने मुख्य अंगों को गर्म रखने के लिए रक्त वाहिकाओं (Blood Vessels) को सिकोड़ लेता है। इससे ब्लड प्रेशर (रक्तचाप) बढ़ जाता है।

खून का गाढ़ा होना (Thickening of Blood): ठंड में खून थोड़ा गाढ़ा हो जाता है, जिससे दिल को इसे पंप करने में

में अचार और नमकीन का खूब इस्तेमाल होता है। इनमें नमक (सोडियम) की मात्रा बहुत ज्यादा होती है, जिससे आपका ब्लड प्रेशर तेजी से बढ़ सकता है, जो हार्ट अटैक का सीधा कारण है।

4. ज्यादा चीनी वाली मिठाइयाँ (High Sugar Sweets) ठंड में होने वाले त्योहारों या पार्टियों में हम ज्यादा मीठी मिठाइयाँ खा लेते हैं। चीनी की अधिकता से शरीर में सूजन (Inflammation) बढ़ती है, वजन बढ़ता है, और यह दिल की सेहत के लिए खतरा पैदा करता है।

गरमागरम समोसे, कचौरी, या पकौड़े खाने का मन करता है। लेकिन इनमें ट्रांस फैट और सैचुरेटेड फैट बहुत ज्यादा होता है, जो धमनियों (Arteries) में ब्लॉकज (रुकावट) पैदा कर सकते हैं और कोलेस्ट्रॉल बढ़ाते हैं।

2. मलाईदार/फुल-फैट डेयरी प्रोडक्ट्स (Full-Fat Dairy) ठंड में कुछ लोग चाय या कॉफी में ज्यादा मलाई वाला दूध या पनीर खाते हैं। फुल-फैट डेयरी प्रोडक्ट्स में मौजूद सैचुरेटेड फैट दिल के मरीजों के लिए हानिकारक हो सकता है।

3. अत्यधिक नमक वाले अचार और नमकीन (High-Salt Pickles/Namkeen) भारतीय खाने

पैदा करता है। 5. भारी, घी/तेल से लदे परांठे (Heavy Parathas) आलू या गोभी के परांठे को खूब सारे घी या तेल के साथ खाने से बचें। ये फूड्स पचाने में भारी होते हैं और तुरंत फैट बढ़ाते हैं, जो सर्दियों में पहले से ही धीमी पाचन क्रिया के लिए चुनौती बन जाता है।

याद रखें: इन चीजों को पूरी तरह छोड़ने की जरूरत नहीं है, लेकिन इनकी मात्रा को बेहद सीमित करें। सुरक्षित रहें: क्या खाएं? सर्दियों में अपने दिल को सुरक्षित रखने के लिए सूप, गाजर, पालक, शकरकंद और ओमेगा-3 से भरपूर नूट्स (जैसे अखरोट) को अपनी डाइट में शामिल करें।

सुरक्षित रहें: क्या खाएं? सर्दियों में अपने दिल को सुरक्षित रखने के लिए सूप, गाजर, पालक, शकरकंद और ओमेगा-3 से भरपूर नूट्स (जैसे अखरोट) को अपनी डाइट में शामिल करें।

सुरक्षित रहें: क्या खाएं? सर्दियों में अपने दिल को सुरक्षित रखने के लिए सूप, गाजर, पालक, शकरकंद और ओमेगा-3 से भरपूर नूट्स (जैसे अखरोट) को अपनी डाइट में शामिल करें।

जब बहुत ज्यादा मुँह खोलने पर “जबड़ा खिसक जाना” हो जाता है

कई बार किसी बड़े स्नैक, बर्गर, सैंडविच को खाते समय या जोर से जम्हाई लेते हुए हम अनजाने में अपना मुँह बहुत अधिक खोल लेते हैं। आमतौर पर यह कोई परेशानी नहीं बनती, लेकिन कुछ लोगों में यह अचानक TMJ Dislocation यानी “जबड़ा खिसक जाना” का कारण बन सकता है—एक दर्दनाक, घबराहट पैदा करने वाली लेकिन उपचार योग्य स्थिति।

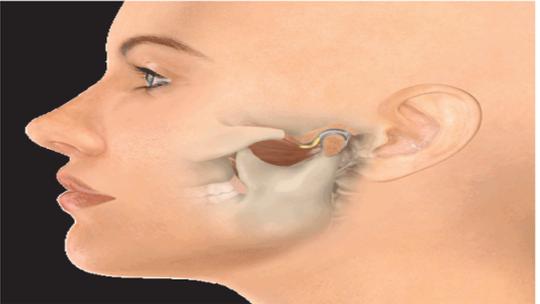
आइए इसे क्रमवार समझते हैं: TMJ क्या है? TMJ यानी Temporomandibular Joint वह जोड़ है जो आपकी निचली जबड़े की हड्डी (Mandible) को आपके सिर की हड्डी (Skull) से जोड़ता है। यह जोड़ कानों के ठीक सामने दोनों ओर होता है और:

1. मुँह खोलने-बंद करने
2. चबाने
3. बोलने
4. जम्हाई लेने

जैसी गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस जोड़ में एक मुलायम Disc होती है जो कुशन का काम करती है— ताक आपका जबड़ा आसानी से आगे-पीछे स्लाइड कर सके।

जबड़ा क्यों खिसक जाता है? 1. सामान्य स्थिति में जब आप मुँह खोलते हैं, Disc और Condyle (जबड़े का गोल सिर) थोड़ा आगे खिसकते हैं। परंतु सीमा से अधिक या तेजी से मुँह खोलने पर Condyle डिस्क से आगे निकलकर Socket के बाहर फंस सकता है। यही Dislocation है।

2. किन लोगों में अधिक संभावना होती है? 1. जिनमें लिगामेंट ढीले होते हैं (Hypermobility / Ehlers-Danlos Syndrome) 2. बहुत जोर से या अचानक जम्हाई लेने पर 3. ज्यादा हँसने, जोर से चबाने या बड़े टुकड़े काटने पर



4. दाँत पीसने (Bruxism) से TMJ पर तनाव बढ़ने से 4. आर्थराइटिस या पुराने TMJ चोट वाले लोग 6. बुजुर्गों में उपास्थि पतली होने से यह समस्या दिखने में नाटकीय लग सकती है—यंत्रों व्यक्ति का मुँह आधा खुला रह जाता है और बंद नहीं हो पाता।

यह महसूस कैसा होता है?—मुख्य लक्षण 1. मुँह खुला रह जाना, बंद न कर पाना 2. जबड़े, गाल, कान या कनपटी में तेज दर्द या खिंचाव 3. बात करने या निगलने में कठिनाई 4. हल्का-सा लार टपकना 5. चेहरा एक तरफ झुका हुआ या जबड़ा टेढ़ा दिखना

6. दोनों तरफ खिसकने पर (Bilateral Dislocation) मरीज पूरी तरह “लॉक” हो जाता है 7. कई बार लोग घबराहट में मुँह जोर से बंद करने की कोशिश करते हैं, जिससे दर्द और बढ़ जाता है।

उपचार — Jaw Dislocation कैसे ठीक किया जाता है? 1. घबराएँ नहीं—प्र तुरंत विशेषज्ञ की सहायता लें। स्वयं इसे जोर लगाकर ठीक करने की कोशिश खतरनाक है। इससे 1. दाँत टूट सकते हैं, 2. मांसपेशियों में ऐंठन बढ़ सकती है, या 3. जोड़ को स्थायी क्षति हो सकती है। 2. अस्पताल में Manual

Reduction मुँह-जबड़ा विशेषज्ञ (Maxillofacial Surgeon) या Emergency Physician एक विशेष तकनीक से इसे वापस सही स्थान पर लाते हैं। 3. Advanced Imaging MRI और Cone-Beam CT से 1. Disc displacement 2. Ligament laxity 3. Condyle position को सटीकता से समझकर उपचार अधिक व्यक्तिगत (Customized) बनाया जा रहा है।

4. TMJ Physiotherapy Advances नए “Neuromuscular Jaw Training” एक्सरसाइज जोड़ को मजबूत करती हैं और Dislocation की पुनरावृत्ति रोकने में मदद करती हैं।

कैसे बचें? 1. बड़े फूड आइटम को छोटे टुकड़ों में काटकर खाएँ 2. जम्हाई लेते समय हाथ से मुँह का सपोर्ट दें 3. बार-बार च्यूइंग गम से बचे 4. दाँत पीसने की आदत हो तो तुरंत उपचार लें 5. TMJ स्ट्रेचिंग एक्सरसाइज सप्ताह में 4-5 दिन करें

संक्षेप में TMJ Dislocation डरावना जरूर लगता है, पर यह उपचार योग्य, नियंत्रित और अक्सर पूरी तरह ठीक होने वाली स्थिति है। समय पर चिकित्सा सहायता और सही सवधानियाँ रखकर आप इसे पूरी तरह रोक सकते हैं।

उपचार के बाद सावधानियाँ 1. कुछ दिनों तक केवल Soft Diet (दलिया, दही, खिचड़ी, सूप) 2. बर्फ को सिकाई से सूजन कम करना 3. Anti-inflammatory दवाएँ 4. बड़े टुकड़े काटकर खाना 5. जम्हाई को नियंत्रित तरीके से लेना 6. अगर Bruxism है, तो Night Mouth Guard 7. बार-बार होने पर विशेषज्ञ द्वारा Botox treatment या Rare cases में surgery नवीनतम अपडेट / आधुनिक दृष्टिकोण (Latest Developments)

एस्पिरिन कैसे धमनियों को साफ रखती है व दिल का बचाव करती है — संक्षेप में

एस्पिरिन खून की प्लेटलेट्स को चिपकने से रोकती है, जिससे खून के थक्के (clots) कम बनते हैं और दिल का दौरा/स्ट्रोक का खतरा घटता है। 2022 की नई गाइडलाइन के अनुसार:

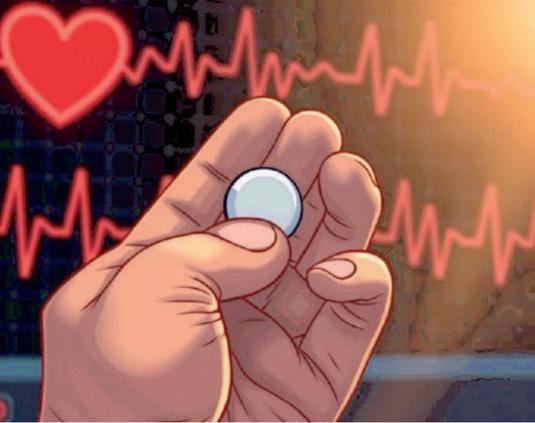
बिना हार्ट प्रॉब्लम वाले लोग रोजाना एस्पिरिन न लें। जिन्हें हार्ट की बीमारी या धमनियों में प्लाक है, उन्हें बेबी एस्पिरिन (81 mg) फायदेमंद हो सकती है—बशर्ते उन्हें ब्लॉडिंग/एलजी की समस्या न हो। प्लाक सिर्फ फैट नहीं होता; यह सूजन भरा चिपचिपा पदार्थ है जो कभी भी खतरनाक clot बना सकता है।

Atrial Fibrillation (AFib) में एस्पिरिन काम नहीं करती; इसके लिए

Xarelto, Eliquis जैसे NOACs दवाएँ बेहतर मानी जाती हैं। साइड इफेक्ट: पेट में जलन, अल्सर, ब्लॉडिंग—सबसे बड़ा जोखिम रक्तस्राव है। प्राकृतिक विकल्प: फिश ऑयल, अदरक, लहसुन, हल्दी, लेकिन ये एस्पिरिन जितने प्रभावी नहीं। लाइफस्टाइल सबसे बड़ा हथियार है—संतुलित आहार, वजन नियंत्रण, एक्सरसाइज, ब्लड शुगर प्रबंधन। निष्कर्ष: एस्पिरिन जीवन बचा सकती है, लेकिन हर किसी के लिए नहीं। सही उपयोग तभी जब प्लाक या हार्ट का जोखिम हो। हर स्थिति में डॉक्टर की सलाह जरूरी।

प्राकृतिक विकल्प: फिश ऑयल, अदरक, लहसुन, हल्दी, लेकिन ये एस्पिरिन जितने प्रभावी नहीं। लाइफस्टाइल सबसे बड़ा हथियार है—संतुलित आहार, वजन नियंत्रण, एक्सरसाइज, ब्लड शुगर प्रबंधन। निष्कर्ष: एस्पिरिन जीवन बचा सकती है, लेकिन हर किसी के लिए नहीं। सही उपयोग तभी जब प्लाक या हार्ट का जोखिम हो। हर स्थिति में डॉक्टर की सलाह जरूरी।

प्राकृतिक विकल्प: फिश ऑयल, अदरक, लहसुन, हल्दी, लेकिन ये एस्पिरिन जितने प्रभावी नहीं। लाइफस्टाइल सबसे बड़ा हथियार है—संतुलित आहार, वजन नियंत्रण, एक्सरसाइज, ब्लड शुगर प्रबंधन। निष्कर्ष: एस्पिरिन जीवन बचा सकती है, लेकिन हर किसी के लिए नहीं। सही उपयोग तभी जब प्लाक या हार्ट का जोखिम हो। हर स्थिति में डॉक्टर की सलाह जरूरी।



ब्रेन ट्यूमर के लक्षण क्या है, यह कैसे ठीक होता है? जानें बचाव के तरीके

ब्रेन ट्यूमर क्या है और क्यों होता है? ब्रेन ट्यूमर तब बनता है, जब मस्तिष्क (Brain) की कोशिकाएँ (Cells) असामान्य रूप से और तेजी से बढ़ने लगती हैं। ये कोशिकाएँ सामान्य कोशिकाओं से बदल जाती हैं और ब्रेन में एक ‘स्पेस ऑक्युपान्ग रोजन’ (SOL) बना देती हैं। मुख्य कारण: ब्रेन ट्यूमर का सबसे बड़ा कारण जीन्स में बदलाव (Mutation) होता है। इसके अलावा, कुछ अन्य कारण भी हो सकते हैं, जिन पर अभी भी शोध जारी है।

परिवारिक (जेनेटिक) कारण: अगर परिवार में जीन का डिफेक्ट है, तो यह माँ-बाप से बच्चे को भी जा सकता है। रेडिएशन का एक्सपोजर: रेडिएशन के संपर्क में अधिक आना। केमिकल्स: पेस्टिसाइड्स या पेट्रोलियम केमिकल्स के साथ काम करने वाले लोगों में, अगर वे उचित सुरक्षा (मास्क, ग्लव्स) नहीं लेते हैं, तो जोखिम बढ़ जाता है।

कमजोर इम्यूनोटी: शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता (इम्यूनोटी) कम होने पर भी ट्यूमर का खतरा बढ़ जाता है। ब्रेन ट्यूमर के प्रमुख लक्षण (Symptoms) इन लक्षणों को कभी नजरअंदाज नहीं करना चाहिए और ऐसे लक्षण दिखने पर तुरंत डॉक्टर से सलाह लेनी चाहिए:

गंभीर और लगातार सिरदर्द: यह सिरदर्द इतना तेज होता है कि रोगी सहन नहीं कर पाता और यह लगातार बढ़ता जाता है। सिरदर्द के साथ उल्टी आना: अगर सुबह के समय सिरदर्द ज्यादा हो और उसके बाद उल्टी आए, तो इसका मतलब है कि मस्तिष्क में दबाव (Brain Pressure) बढ़ रहा है। यह एक गंभीर चेतावनी है।

दोरे या झटके (Seizures/Fits): कभी-कभी मरीज को अचानक झटके आते हैं, वह बेहोश हो जाता है और 5 मिनट बाद वापस होश में आता है। व्यवहार में बदलाव: रोगी के व्यवहार और बोलने के तरीके में परिवर्तन आ सकता है। नजर में कमी (कमजोरी): आंखों की रोशनी कम होना। हाथ-पांव में कमजोरी: शरीर के किसी हिस्से में कमजोरी महसूस होना।

बच्चों में खास ध्यान: अगर बच्चा बार-बार सिरदर्द की शिकायत करे, नजर कमजोर होने की बात करे, या उसे खाने की इच्छा न हो और वह सुस्त बैठा रहे, तो तुरंत चेकअप कराना चाहिए। इलाज की प्रक्रिया और नई तकनीकें ब्रेन ट्यूमर के इलाज के प्रकार इस बात पर निर्भर करते हैं कि ट्यूमर सौम्य (Benign- धीरे बढ़ने वाला, कैसर-रहित) है या घातक (Malignant तेजी से बढ़ने वाला, कैसरस)।

निदान (Diagnosis): पहला और सबसे जरूरी कदम सिटी स्कैन (CT Scan) और एमआरआई (MRI) के जरिए से ही निदान करना है। इलाज के विकल्प सर्जरी (Operation): अक्सर यह पहला और सबसे अहम कदम होता है, खासकर सौम्य ट्यूमर के लिए जो सर्जरी से पूरी तरह ठीक हो सकते हैं। रेडियोथेरेपी (Radiotherapy)

कभी-कभी मरीज को अचानक झटके आते हैं, वह बेहोश हो जाता है और 5 मिनट बाद वापस होश में आता है। व्यवहार में बदलाव: रोगी के व्यवहार और बोलने के तरीके में परिवर्तन आ सकता है। नजर में कमी (कमजोरी): आंखों की रोशनी कम होना। हाथ-पांव में कमजोरी: शरीर के किसी हिस्से में कमजोरी महसूस होना।

बच्चों में खास ध्यान: अगर बच्चा बार-बार सिरदर्द की शिकायत करे, नजर कमजोर होने की बात करे, या उसे खाने की इच्छा न हो और वह सुस्त बैठा रहे, तो तुरंत चेकअप कराना चाहिए। इलाज की प्रक्रिया और नई तकनीकें ब्रेन ट्यूमर के इलाज के प्रकार इस बात पर निर्भर करते हैं कि ट्यूमर सौम्य (Benign- धीरे बढ़ने वाला, कैसर-रहित) है या घातक (Malignant तेजी से बढ़ने वाला, कैसरस)।

निदान (Diagnosis): पहला और सबसे जरूरी कदम सिटी स्कैन (CT Scan) और एमआरआई (MRI) के जरिए से ही निदान करना है। इलाज के विकल्प सर्जरी (Operation): अक्सर यह पहला और सबसे अहम कदम होता है, खासकर सौम्य ट्यूमर के लिए जो सर्जरी से पूरी तरह ठीक हो सकते हैं। रेडियोथेरेपी (Radiotherapy)

रेडिएशन का एक्सपोजर: रेडिएशन के संपर्क में अधिक आना। केमिकल्स: पेस्टिसाइड्स या पेट्रोलियम केमिकल्स के साथ काम करने वाले लोगों में, अगर वे उचित सुरक्षा (मास्क, ग्लव्स) नहीं लेते हैं, तो जोखिम बढ़ जाता है। कमजोर इम्यूनोटी: शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता (इम्यूनोटी) कम होने पर भी ट्यूमर का खतरा बढ़ जाता है। ब्रेन ट्यूमर के प्रमुख लक्षण (Symptoms) इन लक्षणों को कभी नजरअंदाज नहीं करना चाहिए और ऐसे लक्षण दिखने पर तुरंत डॉक्टर से सलाह लेनी चाहिए:

गंभीर और लगातार सिरदर्द: यह सिरदर्द इतना तेज होता है कि रोगी सहन नहीं कर पाता और यह लगातार बढ़ता जाता है। सिरदर्द के साथ उल्टी आना: अगर सुबह के समय सिरदर्द ज्यादा हो और उसके बाद उल्टी आए, तो इसका मतलब है कि मस्तिष्क में दबाव (Brain Pressure) बढ़ रहा है। यह एक गंभीर चेतावनी है।

दोरे या झटके (Seizures/Fits): कभी-कभी मरीज को अचानक झटके आते हैं, वह बेहोश हो जाता है और 5 मिनट बाद वापस होश में आता है। व्यवहार में बदलाव: रोगी के व्यवहार और बोलने के तरीके में परिवर्तन आ सकता है। नजर में कमी (कमजोरी): आंखों की रोशनी कम होना। हाथ-पांव में कमजोरी: शरीर के किसी हिस्से में कमजोरी महसूस होना।

बच्चों में खास ध्यान: अगर बच्चा बार-बार सिरदर्द की शिकायत करे, नजर कमजोर होने की बात करे, या उसे खाने की इच्छा न हो और वह सुस्त बैठा रहे, तो तुरंत चेकअप कराना चाहिए। इलाज की प्रक्रिया और नई तकनीकें ब्रेन ट्यूमर के इलाज के प्रकार इस बात पर निर्भर करते हैं कि ट्यूमर सौम्य (Benign- धीरे बढ़ने वाला, कैसर-रहित) है या घातक (Malignant तेजी से बढ़ने वाला, कैसरस)।

निदान (Diagnosis): पहला और सबसे जरूरी कदम सिटी स्कैन (CT Scan) और एमआरआई (MRI) के जरिए से ही निदान करना है। इलाज के विकल्प सर्जरी (Operation): अक्सर यह पहला और सबसे अहम कदम होता है, खासकर सौम्य ट्यूमर के लिए जो सर्जरी से पूरी तरह ठीक हो सकते हैं। रेडियोथेरेपी (Radiotherapy)

रेडियोथेरेपी (Radiotherapy) इलाज के विकल्प सर्जरी (Operation): अक्सर यह पहला और सबसे अहम कदम होता है, खासकर सौम्य ट्यूमर के लिए जो सर्जरी से पूरी तरह ठीक हो सकते हैं। रेडियोथेरेपी (Radiotherapy)

रेडियोथेरेपी (Radiotherapy) इलाज के विकल्प सर्जरी (Operation): अक्सर यह पहला और सबसे अहम कदम होता है, खासकर सौम्य ट्यूमर के लिए जो सर्जरी से पूरी तरह ठीक हो सकते हैं। रेडियोथेरेपी (Radiotherapy)

रेडियोथेरेपी (Radiotherapy) इलाज के विकल्प सर्जरी (Operation): अक्सर यह पहला और सबसे अहम कदम होता है, खासकर सौम्य ट्यूमर के लिए जो सर्जरी से पूरी तरह ठीक हो सकते हैं। रेडियोथेरेपी (Radiotherapy)

रेडियोथेरेपी (Radiotherapy) इलाज के विकल्प सर्जरी (Operation): अक्सर यह पहला और सबसे अहम कदम होता है, खासकर सौम्य ट्यूमर के लिए जो सर्जरी से पूरी तरह ठीक हो सकते हैं। रेडियोथेरेपी (Radiotherapy)

रेडियोथेरेपी (Radiotherapy) इलाज के विकल्प सर्जरी (Operation): अक्सर यह पहला और सबसे अहम कदम होता है, खासकर सौम्य ट्यूमर के लिए जो सर्जरी से पूरी तरह ठीक हो सकते हैं। रेडियोथेरेपी (Radiotherapy)

रेडियोथेरेपी (Radiotherapy) इलाज के विकल्प सर्जरी (Operation): अक्सर यह पहला और सबसे अहम कदम होता है, खासकर सौम्य ट्यूमर के लिए जो सर्जरी से पूरी तरह ठीक हो सकते हैं। रेडियोथेरेपी (Radiotherapy)

रेडियोथेरेपी (Radiotherapy) इलाज के विकल्प सर्जरी (Operation): अक्सर यह पहला और सबसे अहम कदम होता है, खासकर सौम्य ट्यूमर के लिए जो सर्जरी से पूरी तरह ठीक हो सकते हैं। रेडियोथेरेपी (Radiotherapy)

रेडियोथेरेपी (Radiotherapy) इलाज के विकल्प सर्जरी (Operation): अक्सर यह पहला और सबसे अहम कदम होता है, खासकर सौम्य ट्यूमर के लिए जो सर्जरी से पूरी तरह ठीक हो सकते हैं। रेडियोथेरेपी (Radiotherapy)

रेडियोथेरेपी (Radiotherapy) इलाज के विकल्प सर्जरी (Operation): अक्सर यह पहला और सबसे अहम कदम होता है, खासकर सौम्य ट्यूमर के लिए जो सर्जरी से पूरी तरह ठीक हो सकते हैं। रेडियोथेरेपी (Radiotherapy)

रेडियोथेरेपी (Radiotherapy) इलाज के विकल्प सर्जरी (Operation): अक्सर यह पहला और सबसे अहम कदम होता है, खासकर सौम्य ट्यूमर के लिए जो सर्जरी से पूरी तरह ठीक हो सकते हैं। रेडियोथेरेपी (Radiotherapy)

रेडियोथेरेपी (Radiotherapy) इलाज के विकल्प सर्जरी (Operation): अक्सर यह पहला और सबसे अहम कदम होता है, खासकर सौम्य ट्यूमर के लिए जो सर्जरी से पूरी तरह ठीक हो सकते हैं। रेडियोथेरेपी (Radiotherapy)

रेडियोथेरेपी (Radiotherapy) इलाज के विकल्प सर्जरी (Operation): अक्सर यह पहला और सबसे अहम कदम होता है, खासकर सौम्य ट्यूमर के लिए जो सर्जरी से पूरी तरह ठीक हो सकते हैं। रेडियोथेरेपी (Radiotherapy)

रेडियोथेरेपी (Radiotherapy) इलाज के विकल्प सर्जरी (Operation): अक्सर यह पहला और सबसे अहम कदम होता है, खासकर सौम्य ट्यूमर के लिए जो सर्जरी से पूरी तरह ठीक हो सकते हैं। रेडियोथेरेपी (Radiotherapy)

रेडियोथेरेपी (Radiotherapy) इलाज के विकल्प सर्जरी (Operation): अक्सर यह पहला और सबसे अहम कदम होता है, खासकर सौम्य ट्यूमर के लिए जो सर्जरी से पूरी तरह ठीक हो सकते हैं। रेडियोथेरेपी (Radiotherapy)

रेडियोथेरेपी (Radiotherapy) इलाज के विकल्प सर्जरी (Operation): अक्सर यह पहला और सबसे अहम कदम होता है, खासकर सौम्य ट्यूमर के लिए जो सर्जरी से पूरी तरह ठीक हो सकते हैं। रेडियोथेरेपी (Radiotherapy)

रेडियोथेरेपी (Radiotherapy) इलाज के विकल्प सर्जरी (Operation): अक्सर यह पहला और सबसे अहम कदम होता है, खासकर सौम्य ट्यूमर के लिए जो सर्जरी से पूरी तरह ठीक हो सकते हैं। रेडियोथेरेपी (Radiotherapy)

रेडियोथेरेपी (Radiotherapy) इलाज के विकल्प सर्जरी (Operation): अक्सर यह पहला और सबसे अहम कदम होता है, खासकर सौम्य ट्यूमर के लिए जो सर्जरी से पूरी तरह ठीक हो सकते हैं। रेडियोथेरेपी (Radiotherapy)

रेडियोथेरेपी (Radiotherapy) इलाज के विकल्प सर्जरी (Operation): अक्सर यह पहला और सबसे अहम कदम होता है, खासकर सौम्य ट्यूमर के लिए जो सर्जरी से पूरी तरह ठीक हो सकते हैं। रेडियोथेरेपी (Radiotherapy)

ऑपरेशन के बाद जरूरी हो सकते हैं। टारगेटेड थेरेपी (Targeted Therapy): यह भी कैसरस ट्यूमर के इलाज में इस्तेमाल होती है। नई और सुरक्षित तकनीकें: न्यूरोसर्जरी में अब टेक्नोलॉजी बहुत एडवांस हो गई है, सर्जरी सुरक्षित हुई है। हाई-एडवांस माइक्रोस्कोप: छोटी से छोटी जगह को मैग्नीफाई करके देखने के लिए।

नेविगेशन सिस्टम: इसमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और रीबोटिक टेक्नोलॉजी शामिल है, जो ट्यूमर की सटीक जगह ढूँढने में मदद करते हैं और सामान्य कोशिकाओं को नुकसान पहुंचाकर बिना ट्यूमर को निकासते हैं। रिकवरी, परिवार का साथ और डॉक्टर का संदेश रिकवरी का समय: सामान्य ऑपरेशन के बाद 10 से 15 दिन में टॉकेनिकल जाते हैं और मरीज को 1-2 महीने घर पर आराम करना पड़ता है। जटिल ट्यूमर में ज्यादा समय लग सकता है।

क्योंर होने की संभावना: सौम्य (Benign) ट्यूमर, अगर समय पर डिटेक्ट हो जाए, तो पूरी तरह से क्यूरेबल होते हैं। घातक ट्यूमर का इलाज लंबा होता है। परिवार की भूमिका: परिवार का सपोर्ट सबसे अहम होता है। ब्रेन ट्यूमर जैसी बीमारी में मरीज को परिवार के भावनात्मक साथ की बहुत जरूरत होती है।

रेडियोथेरेपी (Radiotherapy) इलाज के विकल्प सर्जरी (Operation): अक्सर यह पहला और सबसे अहम कदम होता है, खासकर सौम्य ट्यूमर के लिए जो सर्जरी से पूरी तरह ठीक हो सकते हैं। रेडियोथेरेपी (Radiotherapy)

रेडियोथेरेपी (Radiotherapy) इलाज के विकल्प सर्जरी (Operation): अक्सर यह पहला और सबसे अहम कदम होता है, खासकर सौम्य ट्यूमर के लिए जो सर्जरी से पूरी तरह ठीक हो सकते हैं। रेडियोथेरेपी (Radiotherapy)

रेडियोथेरेपी (Radiotherapy) इलाज के विकल्प सर्जरी (Operation): अक्सर यह पहला और सबसे अहम कदम होता है, खासकर सौम्य ट्यूमर के लिए जो सर्जरी से पूरी तरह ठीक हो सकते हैं। रेडियोथेरेपी (Radiotherapy)

रेडियोथेरेपी (Radiotherapy) इलाज के विकल्प सर्जरी (Operation): अक्सर यह पहला और सबसे अहम कदम होता है, खासकर सौम्य ट्यूमर के लिए जो सर्जरी से पूरी तरह ठीक हो सकते हैं। रेडियोथेरेपी (Radiotherapy)

रेडियोथेरेपी (Radiotherapy) इलाज के विकल्प सर्जरी (Operation): अक्सर यह पहला और सबसे अहम कदम होता है, खासकर सौम्य ट्यूमर के लिए जो सर्जरी से पूरी तरह ठीक हो सकते हैं। रेडियोथेरेपी (Radiotherapy)

रेडियोथेरेपी (Radiotherapy) इलाज के विकल्प सर्जरी (Operation): अक्सर यह पहला और सबसे अहम कदम होता है, खासकर सौम्य ट्यूमर के लिए जो सर्जरी से पूरी तरह ठीक हो सकते हैं। रेडियोथेरेपी (Radiotherapy)

रेडियोथेरेपी (Radiotherapy) इलाज के विकल्प सर्जरी (Operation): अक्सर यह पहला और सबसे अहम कदम होता है, खासकर सौम्य ट्यूमर के लिए जो सर्जरी से पूरी तरह ठीक हो सकते हैं। रेडियोथेरेपी (Radiotherapy)

रेडियोथेरेपी (Radiotherapy) इलाज के विकल्प सर्जरी (Operation): अक्सर यह पहला और सबसे अहम कदम होता है, खासकर सौम्य ट्यूमर के लिए जो सर्जरी से पूरी तरह ठीक हो सकते हैं। रेडियोथेरेपी (Radiotherapy)

रेडियोथेरेपी (Radiotherapy) इलाज के विकल्प सर्जरी (Operation): अक्सर यह पहला और सबसे अहम कदम होता है, खासकर सौम्य ट्यूमर के लिए जो सर्जरी से पूरी तरह ठीक हो सकते हैं। रेडियोथेरेपी (Radiotherapy)

रेडियोथेरेपी (Radiotherapy) इलाज के विकल्प सर्जरी (Operation): अक्सर यह पहला और सबसे अहम कदम होता है, खासकर सौम्य ट्यूमर के लिए जो सर्जरी से पूरी तरह ठीक हो सकते हैं। रेडियोथेरेपी (Radiotherapy)

रेडियोथेरेपी (Radiotherapy) इलाज के विकल्प सर्जरी (Operation): अक्सर यह पहला और सबसे अहम कदम होता है, खासकर सौम्य ट्यूमर के लिए जो सर्जरी से पूरी तरह ठीक हो सकते हैं। रेडियोथेरेपी (Radiotherapy)

रेडियोथेरेपी (Radiotherapy) इलाज के विकल्प सर्जरी (Operation): अक्सर यह पहला और सबसे अहम कदम होता है, खासकर सौम्य ट्यूमर के लिए जो सर्जरी से पूरी तरह ठीक हो सकते हैं। रेडियोथेरेपी (Radiotherapy)

रेडियोथेरेपी (Radiotherapy) इलाज के विकल्प सर्जरी (Operation): अक्सर यह पहला और सबसे अहम कदम होता है, खासकर सौम्य ट्यूमर के लिए जो सर्जरी से पूरी तरह ठीक हो सकते हैं। रेडियोथेरेपी (Radiotherapy)

रेडियोथेरेपी (Radiotherapy) इलाज के विकल्प सर्जरी (Operation): अक्सर यह पहला और सबसे अहम कदम होता है, खासकर सौम्य ट्यूमर के लिए जो सर्जरी से पूरी तरह ठीक हो सकते हैं। रेडियोथेरेपी (Radiotherapy)

रेडियोथेरेपी (Radiotherapy) इलाज के विकल्प सर्जरी (Operation): अक्सर यह पहला और सबसे अहम कदम होता है, खासकर सौम्य ट्यूमर के लिए जो सर्जरी से पूरी तरह ठीक हो सकते हैं। रेडियोथेरेपी (Radiotherapy)

रे

धर्म अध्यात्म



अपने जीवन के वास्तुकार कैसे बनें

है कि जीवन संयोग से नहीं, संकल्प से बनता है। जैसे श्रीराम ने अपना हर कदम धर्म, उद्देश्य और स्पष्टता के साथ रखा, वैसे ही हम भी अपना भविष्य गढ़ सकते हैं। रामायणजी बताती हैं कि आप अपने जीवन के वास्तुकार कैसे बनें:

1. स्पष्ट दृष्टि — आपका आदर्श जीवन कैसा दिखता है? जिस तरह राम वनवास में भी अपना धैर्य और मर्यादा नहीं भूले, वैसे ही पहले यह तय करें—आप किस तरह का जीवन जीना चाहते हैं? किस तरह के व्यक्ति बनना चाहते हैं? दृष्टि के बिना दिशा नहीं मिलती।
2. अपने मूल मूल्य तय करें — राम के मूल्य स्पष्ट थे—सत्य, करुणा, कर्तव्य। सीता के मूल्य स्पष्ट थे—धैर्य, प्रेम, त्याग। लक्ष्मण के मूल्य स्पष्ट थे—निष्ठा, सेवा, समर्पण। जब आपके मूल्य स्पष्ट होते हैं, तो

- निर्णय आसान हो जाते हैं।
3. दीर्घकालीन लक्ष्य — जो आपको दृष्टि से मेल खाएँ। महान कार्य एक दिन में नहीं होते। हनुमान जी ने भी समुद्र-लांघन आकस्मिक नहीं किया — वह उनके भीतर के वर्षों के अभ्यास, चरित्र और विश्वास का परिणाम था। छोटे-छोटे कदम जोड़कर ही महान यात्राएँ बनती हैं।
4. अपने सपनों को छोटे-छोटे कार्यों में बदलें। राम ने लंका पर विजय एक ही दिन में नहीं पाई। पहले सेतु बना, फिर योजना बनी, फिर युद्ध हुआ। "बड़ा सपना — छोटे कदम — बड़ी जीत।"
5. अपने जीवन से ऊर्जा-चूसने वाली चीजें हटाएँ। कुंभकर्ण की तरह कुछ लोग, कुछ आदतें, कुछ विचार हमारी ऊर्जा खा जाते हैं। सीता जी का अशोक वाटिका का दुख—रावण या लंका नहीं था—वह अकेलापन और नकारात्मक वातावरण था। अपने जीवन में उन सबको पहचानें जो आपकी रोशनी को मंद करते हैं।

6. अपना मानसिक ढांचा उन्नत करें। हनुमान जी अपनी शक्ति भूल गए थे और जाम्बवंत ने उन्हें याद दिलाया— "तुममें जितनी शक्ति है, तुम कल्पना भी नहीं कर सक्ते।" अपने मन को रोज़ यह याद दिलाएँ कि आपका वास्तुकार आप ही हैं।
7. ऐसी दिनचर्या बनाएँ जो आपको अपने सपनों के व्यक्ति में ढाले। आप भविष्य से नहीं बदलते, आप आदतों से बदलते हैं। लक्ष्मणजी की तपस्या, हनुमानजी की निष्ठा, सीताजी का धैर्य, रामजी का अनुशासन—सब आदतें थीं, चमत्कार नहीं।
8. अपने आसपास प्रेरक लोग रखें। आपका वातावरण आपका भविष्य तय करता है। राम के पास लक्ष्मण थे, हनुमान थे, विभीषण जैसे मार्गदर्शक थे। गलत संगत गलत दिशा की ओर ले जाती हैं। सही संगत सही उन्नति की ओर ले जाती है।

9. लचीले रहें — जीवन बदलता है, आप भी बदलें। रामायण हमें सिखाती है— परिस्थितियाँ बदलें, मार्ग बदलें, पर मूल्य और उद्देश्य नहीं बदलें। आपकी योजना कठोर नहीं होनी चाहिए, आपका संकल्प होना चाहिए।
10. हर महीने अपने जीवन को समीक्षा करें। राम ने भी अपने हर निर्णय पर विचार किया — चाहे वह वनवास हो, या सीता की अग्नि परीक्षा, या लंका का अभियान। जीवन में आगे बढ़ने का एक ही तरीका है— समीक्षा, सुधार और पुनर्संकल्प। अपने जीवन के श्रीराम बनें। आप यह जीवन एक ही बार जीते हैं। इसे बहने न दें—इसे बनाएँ। आपके निर्णय, आपकी आदतें, आपकी संगत, आपका दृष्टिकोण और आपका साहस—यही मिलकर वह जीवन बनाते हैं, जिसे जोकर आप गर्व महसूस करते हैं। रामायणजी कहती हैं कि जीवन को संयोग पर मत छोड़ो। स्वयं उसका निर्माता बनें।

मार्गशीर्ष मास की पूर्णिमा प्रदोष काल में भगवान्दत्तात्रेय का जन्म हुआ। इस दिन इनके बाल रूप की पूजा की जाती है, भगवान्दत्तात्रेय जन्मोत्सव की सभी सनातनियों को हार्दिक शुभकामनाएं

भगवान्दत्तात्रेय हिंदू धर्म में त्रिमूर्ति (ब्रह्मा, विष्णु और महेश) के संयुक्त अवतार माने जाते हैं। उन्हें ज्ञान, योग, तपस्या और वैराग्य का प्रतीक माना जाता है। दत्तात्रेय का नाम रदत्तर (दिया हुआ) और रअत्रेय (ऋषि अत्रि के पुत्र) से मिलकर बना है।



भगवान्दत्तात्रेय की कथा:
- दत्तात्रेय का जन्म ऋषि अत्रि और उनकी पत्नी अनुसूया के तप के फलस्वरूप हुआ। यह माना जाता है कि त्रिमूर्ति ने उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर स्वयं उनके पुत्र के रूप में जन्म लिया।
- उन्हें एक आदिगुरु (प्रथम गुरु) माना जाता है और उनके 24 गुरु (प्रकृति और जीवन से जुड़े) के सिद्धांत प्रसिद्ध हैं, जो आत्म-ज्ञान और जीवन के सत्य को समझने का मार्ग दिखाते हैं।
स्वरूप और प्रतीक:
- भगवान्दत्तात्रेय के तीन मुख होते हैं, जो ब्रह्मा, विष्णु और महेश का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- उनके साथ चार कुत्ते होते हैं, जो चार वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) का प्रतीक हैं।
- उनके पास एक गाय होती है, जो पृथ्वी और उसकी संपत्ति का प्रतीक मानी जाती है।
पूजा और महत्व:
- दत्तात्रेय जयंती मार्गशीर्ष पूर्णिमा को मनाई जाती है।
- उनकी पूजा से ज्ञान, वैराग्य और जीवन में संतुलन की प्राप्ति होती है।
- महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश

और गुजरात में दत्तात्रेय पूजा और उनके मंदिर विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं, जैसे कि महाराष्ट्र के गणगापुर और औरदुर्ग।
- भगवान्दत्तात्रेय ने तीन प्रमुख संप्रदायों की स्थापना की थी: वैष्णव संप्रदाय, शैव संप्रदाय, और शाक्त संप्रदाय। इसके अतिरिक्त, उन्हें नाथ संप्रदाय और महानुभाव संप्रदाय जैसे कई अन्य परंपराओं के प्रेरणास्रोत के रूप में भी माना जाता है। भगवान्दत्तात्रेय को नागा संप्रदाय का प्रेरणास्रोत भी माना जाता है। नागा संप्रदाय मुख्य रूप से तपस्वी और योगी साधुओं का समूह है, जो वैराग्य और तपस्या के मार्ग पर चलते हैं। यह संप्रदाय शैव परंपरा से जुड़ा है और भगवान्दत्तात्रेय के भक्तों का समूह है।
नागा साधु धर्म, योग, तप, और आत्मज्ञान के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे अक्सर कुंभ मेले में बड़ी संख्या में दिखाई देते हैं और अपने त्याग, तपस्या, और भक्ति के लिए प्रसिद्ध हैं।

भूत-पिशाच निकट नहीं आवै, महावीर जब नाम सुनावे.... का आधुनिक अर्थ क्या है?



पिकी कुंडू
"महावीर जब नाम सुनावे" का अर्थ है — जब मन में हनुमानजी का नाम जगता है, तो भीतर की शक्ति भी जाग जाती है।
जब हम हनुमानजी का स्मरण करते हैं — उनकी निडरता, उनकी वीर्य, उनका विवेक, उनकी विनम्रता और उनकी अपार शक्ति — हमारे भीतर सक्रिय हो जाती है, और जब मन बजबज होता है, तो आज के ये आधुनिक भूत-पिशाच — जलन, तुलना, तनाव, अपमान, नफरत, आलस-संदेह हमारे पास आने की हिम्मत नहीं करते। क्योंकि यह पवित्र "बाहरी दानव" नहीं रहती, यह भीतरी दानवों के बेअसर करती है।
हनुमान्वाणीसा के पढ़ने से:
1. मन को स्थिरता मिलती है। बाहरी नकारात्मकता का असर कम होता है।
2. आत्मविश्वास बढ़ता है। भीतरी राक्षस भावनें लजते हैं।
3. निर्णय लेने की क्षमता बढ़ती है। क्योंकि मन स्पष्ट होता है।
4. क्रोध और तनाव कम होता है। हनुमानजी का नाम अपने आप शांति लाता है।
5. सकारात्मक ऊर्जा आकर्षित होती है। जैसा मन, वैसा जीवन।
आज दुनिया शोर से भरी है—सोशल मीडिया की तुलना, जलजल, कटाक्ष, जलन, हेट कमेंट्स, आदि, लेकिन जब आप भीतर महावीर को जगा देते हैं, तो ये सभी नकारात्मक शक्तियाँ अपना रास्ता बदल देती हैं। ये आपके पास आना बंद कर देती हैं।
हनुमान्वाणीसा सिर्फ उर भगवाने का मंत्र नहीं है। यह अंदर बसे दानवों को शांत करने वाला दिव्य है।
अगर आप रोज़ हनुमानजी का स्मरण करें, उनका नाम लें, उनकी उर्जा से जुड़ें तो कोई नकारात्मक शक्ति, कोई बुरा विचार, कोई जलन, कोई अपमान, कोई तनाव — आपके पास टिक ही नहीं सक्ता।
ये है — "भूत-पिशाच निकट नहीं आवै, महावीर जब नाम सुनावे" का आधुनिक अर्थ।

जन्मकालिक चंद्रमा और मानव जीवन

पिकी कुंडू
एक ज्योतिषीय विश्लेषण ब्रह्मांड में जितने ग्रह हैं, उन सभी का व्यक्ति के जीवन पर प्रभाव तो पड़ता ही है इसमें चंद्रमा का विशेष प्रभाव पड़ता है। मानव जब से काल का चिंतन आरंभ किया है, उसी समय से चंद्रमा उसके लिए अपने घटने बड़ने की प्रक्रिया के कारण प्रकृति का अखंड और निरंतर चंद्रमा रहा है। यही कारण है कि संसार के समस्त देशों में, सभी धर्मों के धर्म ग्रंथों में, प्रत्येक काल में चंद्रमा की तिथियों के अनुसार ही धार्मिक विधि निर्माणों का उल्लेख मिलता है, साथ ही साथ वर वधु का मेलापण भी चंद्र की स्थिति से देखी जा सकती है। ज्योतिष विज्ञान में भी जन्म कालिक चंद्र स्थिति का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है, इसके शुभाशुभ स्थिति के आधार पर ही जन्मस्थ शिशु के स्वास्थ्य, स्वभाव मानसिक स्थिति, शिक्षा एवम योग्यता, की क्षमता का ज्ञान बहुत सरलता से प्राप्त किया जा सकता है।

समुद्र में उत्पन्न होने वाले ज्वार भाटे का मूल कारण चंद्रमा की स्थिति ही है। पूर्णिमा के चंद्र का प्रभाव पशु पक्षी के साथ साथ उन्माद प्रस्तित मानव पर भी पड़ता है, क्योंकि वे अन्य दिनों की अपेक्षा इसी दिन अधिक उत्तेजित और अव्यवस्थित होते हैं, उष्ण कटिबंधीय लोग पूर्णिमा की चांदनी रात में अन्य रातों की अपेक्षा सोने पर विचार स्वप्न देखते हैं। यही नहीं स्त्रियों के मासिक धर्म और चंद्रमा के 28दिन चक्र के बीच भी सीधा संबंध है। इस तरह चंद्रमा अपने तिथियों के अनुसार विश्व के जड़ और चेतन मन पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। मछुआरों भी मछली पकड़ने जाते समय इससे भली भांति परिचित होते हैं। पृथ्वी पर ऋतु परिवर्तन भी चंद्रमा के घटने बड़ने का प्रतीक है, इसी के फलस्वरूप ही पृथ्वी की जीवन धारा का उतार चढ़ाव किसी न किसी रूप में हर मास के तीस दिनों में घटता बढ़ता रहता है, अमावस्या के बाद चंद्रमा बढ़ता हुआ एवम पूर्णिमा के बाद घटता हुआ दिखाई देता है, यह स्थिति व्यक्ति के मस्तिष्क पर भी देखा जाता है, शुक्ल पक्ष में मानव मस्तिष्क ज्यादा जागरूक रहता है। इस तरह चंद्रमा का सुष्ठि पर जो प्रभाव पड़ता है इसके फलस्वरूप ही संपूर्ण प्रकृति चाहे वह जड़ हो या चेतन, उनमें धड़कन होती है, स्पंदन होता है, और वह नित्य परिवर्तनशील है।

यह कहानी नहीं... भक्ति का ऐसा रहस्य पढ़ने जा रहे हो, जिसे सुनकर आज भी कैलाश की हवा तक थम जाती है!

कैलाश पर्वत की श्वेत निस्तब्धता में एक भक्त दोबारा—भुंगी। उसका हृदय शिवभक्ति में इतना डूबा था कि उसे लगता था जैसे दुनिया में अगर कोई है, तो बस शिव ही हैं। वही उसकी सुबह, वही उसकी रात, वही उसकी हर श्वास। भक्ति अद्भुत थी, पर उसके भीतर छुपा एक छोटा-सा भ्रम एक दिन उसे ऐसी सीख देने वाला था जो युगों तक उदाहरण बनेगी।
उस दिन कैलाश शान्त था। महादेव गहन नसर्माधि में बैठे थे, और मां पार्वती उनके वाम भाग में विराजमान थीं—शांत, चैतन्य, अतन्व शक्ति। तभी आया भुंगी। जैसे ही उसने शिव को देखा, उसका हृदय उमंग से भर उठता। "वह, शिव और शक्ति एक-दूसरे से अलग कैसे हो सकते हैं? जहाँ शिव हैं, वहाँ मैं हूँ; जहाँ मैं हूँ, वहाँ शिव हैं।"

पर भुंगी के कानों में कोई बात नहीं उतर रही थी। वह दोबारा बोला, फिर तीसरी बार भी, और हर बार उसकी जिद बढ़ती ही गई। मां पार्वती ने समझाया—उदाहरण लिए, सुष्ठि का रहस्य बताया, पर भुंगी अपना हाठ छोड़ने को तैयार ही नहीं था।
जब मां ने स्थान बदलने से इंकार किया, तो भुंगी ने सर्प का रूप धारण कर लिया। वह सोचता था कि यदि शक्ति हट नहीं रही तो मैं ही सरकारूक करना निश्चय जाऊँ। पर मां और शिव के बीच से निकलने का प्रयास करने लगा। यही वह क्षण था जिसने शिव की सर्माधि भंग कर दी। महादेव ने अपनी तीसरी आंख से नहीं, बस एक दृष्टि से ही भुंगी की मूर्च्छता पहचान ली—वह शक्ति और शिव में भेद देखने की चेष्टा कर रहा था।
क्षण भर में महादेव अर्धनारीश्वर रूप में प्रकट हो गए—एक ही देह में दोनों, शक्ति और शिव। अब भुंगी के लिए किसी एक की परिक्रमा करना असंभव जाऊँ। पर उसकी हठ यही नहीं टूटी। उसने इस बार चूहे का रूप लिया और अर्धनारीश्वर की देह को कुतरकर अलग करने का प्रयास करने लगा। यह सीमा थी। यह अनादर था। वह भक्ति का चूर्ण चूर्णी देना था।
मां पार्वती का धैर्य टूट गया। उनकी वाणी अब चेतवनी नहीं, शक्ति बनकर गुंजी—"हे भुंगी! यदि तू

गया। उसे पहली बार समझ आया कि पिता जितने आवश्यक हैं, माता भी उतनी ही। दोनों के बिना किसी जीव का अस्तित्व नहीं। वह रोते हुए मां-पार्वती के चरणों में गिर पड़ा— "माता, मैं अज्ञानी था। मुझे क्षमा कीजिए। जो मैंने किया वह अपराध था।"
जगदंबा की करुणा असीम है। उन्होंने तुरंत उसका कष्ट दूर कर दिया। जब मां ने श्राप वापस लेना चाहा, भुंगी ने हाथ जोड़कर विनती की, "माता, मैं परम यह रूप संसार को बताएगा कि जो शक्ति और शिव में भेद करता है, वह स्वयं अधूरा रह जाता है। मुझे ऐसा ही रहने दीजिए, ताकि मेरा अस्तित्व दूसरों को सत्य समझा सके।"
मां पार्वती प्रसन्न हो गईं, शिव भी पुलकित हुए। दोनों ने भुंगी को अपने प्रमुख गणों में स्थान दिया। ताकि वह अपने हल्के शरीर को संभाल सके, उसे तीसरा पैर भी मिला—जो उसे संतुलित रखे और संदेश दे कि जो शक्ति और शिव को एक माने, वही पूर्ण है।
कैलाश के मार्गों पर आज भी कहा जाता है कि जहाँ अर्धनारीश्वर हैं, वहाँ त्रिपद भुंगी की ध्वनि हमेशा सुनाई देती है—याद दिलाती हुई कि स्त्री और पुरुष दो नहीं, एक ही शक्ति के रूप हैं। और जो इस सत्य को न माने, वह संसार में भटकता ही रह जाएगा।



केवट प्रसंग

गंगा पार करनी थी सो गंगा किनारे आए। लक्ष्मणजी ने केवट को पुकारा और पूजा, क्या तुम्हें पार ले जाऊँ ?
केवट अपनी नौका में—से से कलने लगा— मैं तुम्हारा मर्म जानता हूँ। लक्ष्मणजी- अरे भाई! कौन सा मर्म जानता है तु? केवट- राम के चरणों की धूलि के स्रारों से पथर की श्रिलेखा सजीव हो गई। मेरी नौका तो लकड़ी की है। राम-चरण स्रारों से मेरी नौका भी यदि खी बज जाए तो मैं अपने कुटुम्ब का परिपालन कैसे करूँगा और इस दूसरी स्त्री का क्या करूँगा? यह मेरी नौका में आप बैठना ही चाहते हैं तो पहले मुझे रामचन्द्रजी के चरण धोने की अनुमति दी जाए। उनके चरण धोकर धूलि साक करने के बाद ही मैं उन्हें अपनी नौका में बैठने दूँगा। केवट के प्रेमपूर्ण वचन से रघुनाथजी को प्रसन्नता हुई। उन्होंने केवट को अपने पास बुलाया। वह लकड़ी का बर्तन लेकर आया और कहने लगा कि मेरी इच्छा है कि आपके चरण पदार्थों। रामचन्द्र सोच रहे हैं कि मेरे दोनों पौतों के स्वामी तो यहाँ हैं ही, अब तीसरा आ गया। (वैशम्पैयणी ने व्याप किया था। निर्दिकारी लक्ष्मण दीक्षित चरण की सेवा करेगा और सीताजी वाम चरण की।) गंगाजल से दोनों पौत पल्लव लगाने ला। बड़ी लगन से पौत पल्लवों ने मेरी उच्छा पूर्ण लेने दीजिए। गिन चरणों की चरण पादुका भरता रहो तो ताराई। सोइ चरण केवट धोय लौटें तब धरे चरण चारु ॥ मज मन रामचरण सुखदायी। यह केवट पूर्वजन्म में वीरभद्रुद में कथ्य था। वह नारायण की चरण सेवा करना चाहता था। लक्ष्मणी और शैव ने अनुमति नहीं दी। आज लक्ष्मणी सीता बनीं हैं और शैव लक्ष्मण। शिष्टसे जन्म में तो आपने मुझे नारायण की चरण सेवा नहीं करने दी थी। आज आप दोनों खड़े हैं और मैं सेवा कर रहा हूँ। केवट ने साष्टांग प्रणाम किया। केवट ने राम, लक्ष्मण, सीता को गंगा पार करा दिया। रामजी ने सेवा कि इसे कुटु टवा वारिष्ट,

किन्तु क्या दूँ? मेरे पास कुछ है तो नहीं। सीताजी रामजी का मनोवापन जान गईं। उन्होंने अपनी श्रेष्ठ रत्न को दे दी। रघुनाथ केवट को वह श्रेष्ठ रत्न देने लगे। रत्न तुम दान के रूप में नहीं, सेवा के उपहार के रूप में यह देते हैं। केवट ने कस- मेरी प्रीतिज्ञा है कि साधु-सत्त्वों को बिना दाम ही पार लाऊँ। श्रीराम- प्रसाद के रूप में ले लो। केवट- आज का प्रसंग प्रसाद लेने के जैसा नहीं है। वीरद बर्ष के वनवास की समाप्ति के बाद जब आपका राधाभिषेक होगा तभी मैं प्रसाद लूँगा। केवट ने श्रेष्ठ रत्न लेने से बार-बार इंकार किया तो लक्ष्मणजी उससे स्वीकारने के लिए आग्रह करने लगे। तो केवट ने कस- मैं और राम एक ही जाति के हैं। मैं अपने भाई से दाम कैसे लूँ? केवट, केवट से उत्तराई लेता है क्या? केवट ने श्रेष्ठ रत्न लेकर कस- क्या बकता है तु? क्या तूम तुम एक जाति के हैं? केवट- मेरी और आपकी नहीं, किन्तु मेरी और रामचन्द्रजी की जाति एक है। मैं गंगा नदी का केवट हूँ, लोगों को गंगा पार कराता हूँ। तो रामचन्द्र जी संसार सिन्धु के केवट हैं, लोगों को संसार-सागर पार करा देते हैं। इस जैव को मैं संसार-सागर के किनारे लगा दीजिएगा। जस्यु नाम सुभिरत एक बारा। त्रयार्थं वर भयस्वु अपरा। राधाभिषेक के समय केवट आ नहीं सका था क्योंकि रामचन्द्र किनाम द्वारा अयोध्या लौटे थे, किन्तु रामचन्द्र ने उसे याद करके गंगाजल द्वारा प्रसाद भिजवाया था। अरत लौनों श्राने बजने लगे। सीताजी सार्वकिक विवेक और संकोच से चरती थीं। श्राने राम वत रहे थे, शीव में सीताजी और अरत में लक्ष्मणजी। राम और लक्ष्मण के बीच वत रहे सीताजी की शोभा की क्या बात करे? ब्रह्म नदी शिव माया प्रैसी। मानों और और ब्रह्म के बीच माया वत रही है।



कर्मों का फल है। कोठ न कारु सुख दुःख का दाता। निज कृत कर्म भोग सुनु गाता। राम तो परमानन्द स्वस्वयं है। जो उनका स्मरण करते हैं, उन्हें दुःख नहीं होता। सुख ही होता है। सो उनको दुःख लेने का तो कोई प्रश्न ही नहीं है। उनके मन में कैकेयी के प्रति कोई क्रोध नहीं है। राम को कर्म का बन्धन तो है नहीं, वे कर्म से परे हैं। वे अपनी इच्छा से ही प्रकट होते हैं। जीव को अपने कर्म के कारण जन्म लेना पड़ता है। ईश्वर स्वैका से प्रकट होते हैं। फिर भी परमात्मा लौटा करने के लिए प्रकट हुए हैं, सो कर्म की मर्यादा में रहते हैं। जगत् के सामने एक आदर रखते हैं कि स्वयं परमात्मा रोते हुए भी कर्म के बन्धन में हैं। वे स्वैका से ही अवतरित हुए हैं। जीव अपने कर्म से जन्म लेता है। रामकथा कई कथों में वर्णित की गई है। कैकेयी ने राम को वनवास दिया। (कोशल्या माता को प्रति दुःख हुआ— कैकेयी ने राम को वनवास दिया।)। रामचन्द्र करते हैं कि वह कर्म का फल है। पूर्वजन्म में भैवे कैकेयी को दुःख दिया था, उसकी ही ये फल है। पूर्व में कैकेयी जन्मद्विभ क्रोध की पत्नी श्रेष्ठा का। परशुराम ने परशुरामावतार में जो किया उसका फल इस अवतार में पाया रू।

परशुराम उन्हीं के पुत्र थे। एक बार नन्द्वि विमसेन कई असुराओं के साथ सरोवर में विहार कर रहा था। रेणुका ने वह दृश्य देखा तो उसके मन में भी विकार जगा और कुछ असुराओं भी। इन असुराओं को तैरा सुख मिल रहा है, देसा तो कभी मुझे मिला ही नहीं है। रेणुका को लौटने में देर रई, जन्मद्विभ जगत् एक रेणुका ने मन से व्यभिचार किया है जन्मद्विभ रिक्खन ले गए। उन्होंने पुत्र से कस- तैरी माता ने पाप किया है, महादेव की स्तुति कर दो। पिता की आज्ञा सुनकर, बिना कुछ सोचे-विचारे ही परशुराम ने रेणुका का शिरोच्छेद कर दिया। रामचन्द्र कोशल्या को समझा रहे हैं कि इस जन्म में भैवे गाता को दुःख दिया था सो इस जीवन में वह मुझे दुःख दे रही है। महात्मा तो यहाँ तक करते हैं कि राम ने बालि की लया की थी तो बालि कुम्भवातार के समय पारथि का रूप लेकर आया और भगवान्दत्तात्रेय को उसके बाण से प्राण त्यागने पड़े। किए हुए कर्मों का फल भुगतना ही पड़ता है। सारी तत लक्ष्मणी और गुरुक वातवृत्ति करते हुए चौकसी करते रहे। ब्रह्मसूत्रों में रामचन्द्रजी ने स्वानिदि से निवृत्त लेकर शिवजी की पूजा की।



आईएमएफ द्वारा भारत के राष्ट्रीय खाते आँकड़ों को 'सी' ग्रेड दिए जाने का विवाद - विपक्ष का तंज राजनीति और संसद में सरकार का पक्ष-विस्तृत विश्लेषण

भारत की अनुमानित जीडीपी 7.3 ट्रिलियन, अमेरिकी डॉलर विकास की तरफ इशारा कर रही है, तो आईएमएफ ने डेटा को ग्रेड रसीर रेटिंग क्यों दी? आईएमएफ जैसी संस्था किसी देश के राष्ट्रीय खाते आँकड़ों की गुणवत्ता को कमजोर वर्ग में रखे, तो वह वैश्विक नीति - निर्माताओं और निवेशकों की दृष्टि में चिंता का विषय बन जाता है - एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गौड़िया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तर पर अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) द्वारा भारत के नेशनल एकाउंट्स स्टेटिस्टिक्स को वर्ष 2025 के वार्षिक मूल्यांकन में 'सी' ग्रेड दिया जाना, भारत की आर्थिक विमर्श में अचानक एक प्रमुख विषय बन गया। राष्ट्रीय खाते आँकड़ों किसी भी देश की आर्थिक सेहत, विकास उत्पादन, निवेश, उपभोग तथा आमदनी की संरचना को दर्शाते हैं, और इसलिए इन आँकड़ों की प्रामाणिकता को लेकर किसी भी प्रकार की विदेशी शंका स्वाभाविक रूप से बड़े राजनीतिक और आर्थिक तृष्णान का कारण बनती है। यह आलोचना केवल एक तकनीकी अवलोकन नहीं थी, बल्कि इसने भारत की जीडीपी वृद्धि दर, सरकार की आर्थिक नीतियों, विपक्ष की प्रतिक्रिया और संसद में उठे सवालों तक व्यापक बहस को जन्म दिया है। आईएमएफ द्वारा दिया गया यह "सी" ग्रेड मुख्यतः उन सांख्यिकीय पद्धतितक कमियों से जुड़ा है, जो भारत की तेजी से बदलती आर्थिक संरचना के अनुरूप अपने राष्ट्रीय खातों को नियमित रूप से अपडेट करने में सामने आती रही हैं। यह स्थिति न तो भारत-विशेष है और न ही किसी आर्थिक संकेत की ओर संकेत, लेकिन मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गौड़िया महाराष्ट्र यह मानता हूँ कि यह तथ्य

अवश्य है कि आईएमएफ जैसी संस्था किसी देश के राष्ट्रीय खाते आँकड़ों की गुणवत्ता को कमजोर वर्ग में रखे, तो वह वैश्विक नीति - निर्माताओं और निवेशकों की दृष्टि में चिंता का विषय बन जाता है। साथियों बात अगर हम आईएमएफ ने भारत को 'सी' ग्रेड क्यों दिया, पद्धति, चुनौतियाँ और तकनीकी कमजोरियाँ समझने को करें तो, आईएमएफ की ग्रेडिंग प्रणाली में "सी" श्रेणी वह है, जहाँ आँकड़ों की उपलब्धता तो पर्याप्त होती है, लेकिन उनकी विश्वसनीयता, सटीकता, पारदर्शिता और तुलनात्मकता पर सवाल खड़े होते हैं। भारत को यह ग्रेड मुख्यतः चार प्रमुख कारणों से दिया गया (1) भारत का आधार वर्ष जो जीडीपी तथा अन्यराष्ट्रीय खाते आँकड़ों की गणना के लिए उपयोग होता है, अभी भी 2011-12 है। यह वह समय था जब भारतीय अर्थव्यवस्था की संरचना आज की तुलना में कहीं भिन्न थी। डिजिटल अर्थव्यवस्था, ई-कॉमर्स, स्टार्टअपपरिस्थितिकी तंत्र, गिग- इकोनॉमी, ऑनलाइन सेवाएँ, स्मार्ट-इन्फ्रास्ट्रक्चर और प्लेटफॉर्म-आधारित आर्थिक गतिविधियों का आकार आज बहुत अधिक है, जबकि 2011-12 का फ्रेमवर्क उन्हें ठीक से प्रतिबिंबित नहीं कर पाता इसलिए आईएमएफ का कहना है कि इतने पुराने आधार वर्ष के कारण वास्तविक आर्थिक गतिविधियों का सही मूल्यांकन बाधित होता है। (2) आईएमएफ ने भारत के डेफ्लेटर यांने नॉमिनल जीडीपी को रिप्ले जीडीपी में बदलने के लिए उपयोग होने वाले मूल्य सूचकांकों में कमियाँ बताईं। विकसित देशों में प्रोड्यूसर प्राइस इंडेक्स आधारित व्यापक मूल्य प्रणाली प्रचलित है, जबकि भारत मुख्यतः होलसेल प्राइस इंडेक्स पर निर्भर है। इससे जीडीपी की वास्तविक वृद्धि का अनुमान प्रभावित हो सकता है। (3) बड़ी

कमजोरी अनौपचारिक क्षेत्र की वास्तविक हिस्सेदारी और गतिविधि का अपूर्ण कवरेज है। भारत की अर्थव्यवस्था में अनौपचारिकता की मात्रा बहुत अधिक है, और आँकड़ा संग्रहण को पारंपरिक पद्धतियों इस विविध और बदलते कार्यक्षेत्र को पर्याप्त रूप से शामिल नहीं कर पाती। आईएमएफ का कहना है कि उत्पादन और व्यय आधारित जीडीपी अनुमान में पाए जाने वाले अंतर भी इसी पद्धतितक कमजोरियों का संकेत है। (4) आलोचना तिमाही आँकड़ों की गुणवत्ता और सीजनल एडजस्टमेंट्स, इंस्ट्रूटयूशनल सेक्टर ब्रेकडाउन और हाई-फ्रेक्वेंसी डेटा हारमोनिसाशन की अनुपस्थिति से जुड़ी है। आधुनिक अर्थव्यवस्थाएँ नियमित रूप से इन तकनीकों का उपयोग करती हैं ताकि आँकड़े उन उतार-चढ़ावों से मुक्त रहें जो केवल मौसम, त्योहारी सीजन या अस्थायी आर्थिक घटनाओं के कारण उत्पन्न होते हैं। आईएमएफ ने यह भी ध्यान दिलाया कि भारत ने 2015 के बाद से आधार वर्ष बदला ही नहीं, जबकि कई प्रमुख अर्थव्यवस्थाएँ हर पाँच वर्ष में ऐसा करती हैं। आईएमएफ का निष्कर्ष यही था कि भारत की राष्ट्रीय खातों की संरचना डेटा उपलब्धता के मामले में व्यापक है, लेकिन डेटा गुणवत्ता और आधुनिकता अपेक्षाकृत कमजोर है, जिसके कारण उसे "सी" ग्रेड दिया गया। साथियों बात अगर हम विपक्ष ने सरकार पर तंज क्यों किया, राजनीतिक प्रतिध्वनि और बढ़ती बहस को समझने की करें तो, आईएमएफ की रिपोर्ट का राजनीतिक प्रभाव तत्काल दिखाई दिया। कांग्रेस ने इस ग्रेडिंग का उपयोग सीधे-सीधे सरकार की आर्थिक विश्वसनीयता पर प्रश्न उठाने के लिए किया। (उनका आरोप था कि जब आईएमएफ ही डेटा में कमजोरी बता रहा है तो सरकार द्वारा प्रस्तुत की जा रही 8.2 प्रतिशत जैसी उच्च जीडीपी वृद्धि दर कैसे विश्वसनीय

मानी जाए? कांग्रेस के वरिष्ठ नेता जयराम रमेश ने कहा कि सरकार का राजीव विकास दिखा रही है, जबकि वास्तविकता में रोजगार, ग्रामीण आय और घरेलू उपभोग में ठोस सुधार नहीं दिखता। उन्होंने टिप्पणी की कि यदि आईएमएफ यह कह रहा है कि राष्ट्रीय खाते आँकड़ों में पद्धतितक कमजोरियाँ हैं, तो जीडीपी वृद्धि दर को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया जाना आँकड़ों का सौंदर्यीकरण है। विपक्ष का दूसरा तर्क यह था कि आईएमएफ की यह आलोचना अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की आर्थिक विश्वसनीयता को कमजोर कर सकती है, जिससे प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, अंतरराष्ट्रीय फंडिंग और वैश्विक बाजारों में भरोसा प्रभावित हो सकता है। उनका कहना था कि सरकार को आत्मसंतोष छोड़कर डेटा पारदर्शिता को प्राथमिकता देनी चाहिए, क्योंकि आर्थिक वृद्धि की असली परीक्षा आमनागरिकों के जीवन-स्तर में सुधार और रोजगार सृजन से होती है, न कि केवल आँकड़ों के चमकदार प्रस्तुतिकरण से। विपक्ष का यह हमला सिर्फ राजनीतिक नहीं बल्कि आर्थिक भी था, क्योंकि आईएमएफ वैश्विक संस्थाओं में सबसे महत्वपूर्ण मानी जाती है, और उसका मूल्यांकन अंतरराष्ट्रीय निवेशकों और रेटिंग एजेंसियों के लिए संकेतक का काम करता है। साथियों बात अगर हम विपक्ष मंत्री द्वारा बुधवार 3 दिसंबर 2025 को संसद में दिए गए जवाब, आईएमएफ ने जीडीपी ग्रोथ पर सवाल नहीं उठाया, केवल आधार वर्ष पुराना है। इसको समझने की करें तो, विपक्ष की तीखी आलोचना और मीडिया में बड़ी चर्चा के बीच वित्त मंत्री ने संसद में पूर्ण स्पष्टता के साथ सरकार की स्थिति रखी। उन्होंने कहा कि आईएमएफ का "सी" ग्रेड किसी भी रूप में भारत की जीडीपी वृद्धि दर या उसकी आर्थिक उपलब्धियों को चुनौती नहीं देता। उन्होंने जोर देकर कहा कि आईएमएफ की

टिप्पणी मात्र पद्धति और तकनीकी संरचना पर केंद्रित है, न कि भारत की आर्थिक परफॉर्मेंस पर। उन्होंने यह भी बताया कि भारत सरकार ने पहले ही आधार वर्ष बदलने की प्रक्रिया शुरू कर दी है और 2022-23 को नया आधार वर्ष बनाने के निर्णय पर काम तेजी से चल रहा है। यह अपडेट फरवरी 2026 से लागू होगा, जो भारत के राष्ट्रीय खातों को अधिक आधुनिक, वैज्ञानिक और वैश्विक मानकों के अनुरूप बना देगा। वित्तमंत्री ने यह भी कहा कि आईएमएफ ने भारत की आर्थिक मजबूती, वित्तीय स्थिरता, निजी निवेश, डिजिटल भुगतान प्रणाली और बैंकिंग क्षेत्र की लचीलापन की विशेष सराहना की है। उनका कहना था कि भारत की अर्थव्यवस्था की मजबूती को दुनियाँ मान रही है और "सी" ग्रेड को गलत तरीके से राजनीतिक विवाद में घसीटा जा रहा है। उन्होंने स्पष्ट किया कि आईएमएफ स्वयं भारत की जीडीपी वृद्धि दर को उच्च और स्थिर मानता है, और यह स्थिति इसलिए संभव है क्योंकि भारत की आर्थिक बुनियाद मजबूत है। इसलिए, "सी" ग्रेड को जीडीपी के अविश्वसनीय होने के रूप में प्रस्तुत करना सटीक रूप से दुष्प्रचार है। साथियों बात अगर हम राष्ट्रीय और वैश्विक मंचों के रूप में इस विवाद से उत्पन्न बड़े प्रश्नों को समझने की करें तो यह विवाद देश को एक महत्वपूर्ण प्रश्न की ओर ले जाता है कि क्या आर्थिक विकास को केवल आँकड़ों से मापा जा सकता है, या आँकड़ों की गुणवत्ता विकास की विश्वसनीयता का मूल आधार है? आईएमएफ की टिप्पणी इस बात का संकेत है कि आर्थिक आँकड़ों का आधुनिक, पारदर्शी और अद्यतन होना आवश्यक है। भारत जैसी विशाल और बहुआयामी अर्थव्यवस्था के लिए यह चुनौती और भी बड़ी है। वैश्विक स्तर पर भारत का महत्व बढ़ा है - विश्व की पाँचवीं सबसे बड़ी

अर्थव्यवस्था, तेजी से उभरती बाजार शक्ति, रणनीतिक खिलाड़ी, तकनीकी केंद्र और वैश्विक आपूर्ति शृंखलाओं का नया केंद्र, ऐसे में यह अनिवार्य है कि भारत अपनी आर्थिक सांख्यिकी को दुनियाँ की सर्वोत्तम प्रणालियों के अनुरूप बनाए रखे। निवेशक बहुराष्ट्रीय कंपनियों, वैश्विक बैंक और रेटिंग एजेंसियों डेटा विश्वसनीयता पर बहुत निर्भर करती हैं। यदि एक बड़ा देश अपनी आर्थिक वास्तविकता को कमजोर सांख्यिकी के कारण सही ढंग से प्रस्तुत न कर सके, तो उसके ऊपर अंतरराष्ट्रीय भरोसा प्रभावित होता है। अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि, आँकड़ों की गुणवत्ता ही आर्थिक विश्वसनीयता की नींव आईएमएफ की "सी" ग्रेडिंग भारत की अर्थव्यवस्था की मजबूती पर प्रश्नचिह्न नहीं है, लेकिन यह संदेश अवश्य है कि आँकड़ों की गुणवत्ता में निरंतर सुधार आवश्यक है। विपक्ष की आलोचना अपना राजनीतिक पक्ष दर्शाती है, जबकि सरकार का जवाब यह बताता है कि समाधान की दिशा में कदम उठाए जा चुके हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर यह घटना इस बात की याद दिलाती है कि किसी भी आधुनिक अर्थव्यवस्था का स्वास्थ्य केवल जीडीपी वृद्धि से नहीं, बल्कि विश्वसनीय, पारदर्शी और अद्यतन आँकड़ों की नींव पर टिका होता है। भारत का आने वाला आधार-वर्ष अपडेट उन्नत पद्धतियाँ, व्यापक मूल्य सूचकांक प्रणाली और परिवर्तनशील आर्थिक संरचना का वैज्ञानिक प्रतिबिंब ये सभी कदम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि भविष्य में भारत वैश्विक आर्थिक मूल्यांकन में न केवल बेहतर स्कोर पाए, बल्कि अंतरराष्ट्रीय निवेशकों और नीति-निर्माताओं के बीच और भी अधिक मजबूत विश्वास स्थापित करे।

कौशल से क्रांति: कला के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत की ओर

- डॉ. अंकुर शरण

आज भारत ऐसे ऐतिहासिक दौर से गुजर रहा है, जब पूरी दुनिया उत्सुक निगाहों से हमारे देश की ओर देख रही है। "मेक इन इंडिया", "स्किल इंडिया", "वोकल फॉर लोकल" और "आत्मनिर्भर भारत" जैसे अभियानों के माध्यम से भारत सरकार देश को वैश्विक मंच पर नई पहचान दिलाने के लिए निरंतर कार्य कर रही है। यह समय हर भारतीय के लिए आत्ममंथन का है - कि हम अपने कौशल को कैसे निखारें और देश के विकास में अपनी भूमिका कैसे सुनिश्चित करें। कौशल विकास केवल रोजगार पाने का माध्यम नहीं, बल्कि समाज में स्वस्थ और सकारात्मक बदलाव लाने का सबसे सशक्त साधन है। जब व्यक्ति अपने हुनर को पहचान कर उसे प्रशिक्षण व अभ्यास से निखारता है, तभी वह आत्मनिर्भर बनता है और दूसरों के लिए भी प्रेरणा बनता है। कला, हस्तशिल्प, लोक-संगीत, पेंटिंग, कैलेंडर, मूर्तिकला, टेक्सटाइल डिजाइन - हमारी परंपरागत भारतीय कला विरासत

में ऐसे अरसंख्य हुनर हैं, जो आज वैश्विक बाजार में अत्यंत संभावनाशील हैं। Art Nirbhar Bharat पहल इसी सोच से जन्मी है - कि भारत की पारंपरिक और आधुनिक कला को न केवल संरक्षित किया जाए, बल्कि उसे कौशल आधारित वैश्विक पहचान दिलाकर निर्यात के मंच तक पहुँचाया जाए। मेरा स्वयं का दो दशकों से अधिक का अनुभव निर्यात-आयात उद्योग में रहा है, जहाँ अंतरराष्ट्रीय व्यावसायिक प्रक्रियाओं, बाजार की माँग और गुणवत्ता मानकों को निकट से समझने का अवसर मिला। इसी अनुभव के आधार पर मेरा प्रयास है कि भारतीय कलाकारों, कारीगरों और नवोदित क्रिएटिव युवाओं को वैश्विक समाधान उपलब्ध कराए जाएँ, ताकि भारत की कला और संस्कृति अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गौरव बन सके। "वोकल फॉर लोकल" बनने के लिए हमें क्या करना होगा? स्थानीय कलाकारों को पहचान दें और क्षेत्र के कलाकार, शिल्पकार और लोक कलाकारों की प्रतिभा को सामने लाना प्राथमिक जिम्मेदारी है।



कौशल प्रशिक्षण और अपग्रेडेशन
परंपरागत कला को नई तकनीक, डिजाइन और पैकेजिंग के साथ आधुनिक बाजार की जरूरतों से जोड़ना आवश्यक है।
डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग
सोशल मीडिया, ई-कॉमर्स और वचुअल प्रदर्शनों के माध्यम से स्थानीय

कला को वैश्विक दर्शकों तक पहुँचाया जा सकता है।
स्थानीय उत्पाद अपनाएँ
हर नागरिक यदि भारतीय कला व हस्तशिल्प से बने उत्पादों को प्राथमिकता दे, तो सीधा समर्थन कलाकारों तक पहुँचेगा।
निर्यात पर फोकस
सरकारी नीतियों और निजी प्रयासों के

माध्यम से हस्तशिल्प व कलात्मक उत्पादों को अंतरराष्ट्रीय बाजार से जोड़ा जाए।
युवा पीढ़ी को जोड़ना
स्कूल-कॉलेज स्तर पर कला आधारित कौशल शिक्षा अनिवार्य रूप से जोड़ी जाए, ताकि नई पीढ़ी अपनी विरासत को अपनाए।
कौशल केवल रोजी-रोटी का साधन नहीं, बल्कि देश की पहचान और आर्थिक शक्ति का आधार भी है। जब हर नागरिक अपने हुनर को निखार कर "वोकल फॉर लोकल" बनाए, तभी भारत वास्तव में "वैश्विक गुरु" की दिशा में मजबूती से आगे बढ़ेगा।
Art Nirbhar Bharat केवल एक अभियान नहीं, बल्कि एक जन-आंदोलन है - जिसका लक्ष्य है:
☑ कला को स्वावलंबन बनाना,
☑ कलाकार को सम्मान देना,
☑ और भारत की सांस्कृतिक विरासत को वैश्विक गौरव में बदलना।
आइए, हम सभी अपने-अपने कौशल को पहचानें, निखारें और भारत को कला व संस्कृति के बल पर विश्व पटल पर और ऊँचाइयों तक पहुँचाएँ।

रक्तवीर संस्था (रजि.) के द्वारा स्वैच्छिक रक्तदान शिविर 07 दिसम्बर को

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। गौरा नगर कॉलोनी स्थित चार संप्रदाय आश्रम में रक्त दान के क्षेत्र में अग्रणी रक्तवीर संस्था (रजि.) के द्वारा सद्भावना ब्लड बैंक, मथुरा के सहयोग से 61 वां स्वैच्छिक रक्तदान शिविर 07 दिसम्बर 2025 को पूर्वाह्न 10 बजे से अपराह्न 04 बजे पर्यन्त आयोजित किया जाएगा। जानकारी देते हुए रक्तवीर डॉ. राधाकांत शर्मा ने बताया कि थैलिसीमिया बीमारी से प्रस्त बच्चों के लिए रक्तवीर संस्था द्वारा समय-समय पर स्वैच्छिक रक्तदान शिविर लगाया जाता है। (क्योंकि थैलिसीमिया बीमारी से प्रस्त बच्चों को प्रति महीने 2 से 3 यूनिट रक्त की आवश्यकता पड़ती है। जिससे उनके जीवन की रक्षा होती है। रक्तवीर संस्था के संस्थापक मुकेश अग्रवाल, सचिव मोहन वल्लभ शर्मा एवं कोषाध्यक्ष गिरधर शर्मा ने सभी नगर वारिसों से इस स्वैच्छिक रक्तदान शिविर में बढ़-चढ़ कर रक्तदान करने की अपील की है।



कला भारती हिल्स फेस्टिवल का भव्य आयोजन 7 को

इंद्रजीत, डॉ. सविता, डॉ. पुष्पा जोशी, डॉ. शंभू पंवार, मामचंद व नीलम को मिलेगा लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड

डॉ. शंभू पंवार

नई दिल्ली। 5 दिसंबर। कला भारती हिल्स फेस्टिवल 7 दिसंबर को राजधानी दिल्ली स्थित कांस्टीट्यूशनल क्लब में भव्य रूप से मनाया जाएगा। हिल्स फाउंडेशन की संस्थापक अध्यक्ष ममता सोनी ने बताया कि समारोह में स्वास्थ्य, शिक्षा, पत्रकारिता, साहित्य, कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने वाली शिष्यताओं को सम्मानित किया जाएगा। जिसमें नीलम कुमारी (स्वास्थ्य), डॉ. इंद्रजीत शर्मा, योग गुरु मामचंद तोनगरिया, (समाजसेवा), डॉ. सविता चड्ढा (साहित्य), डॉ. पुष्पा जोशी, (शिक्षा) डॉ. शंभू पंवार (पत्रकारिता), एतराम सिद्धी जाहिल लखनवी (कला), मातीन अमरोही (उर्दू साहित्य) को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया जाएगा। इनके अलावा विभिन्न क्षेत्रों की अनेक प्रतिभाओं को एक्सिलेंस अवार्ड से सम्मानित किया जाएगा। समारोह के मुख्य अतिथि सीआरपीएफ के डीआईजी परम शिवम होंगे एवं अध्यक्षता आई बी के सहायक निदेशक रमेश कुमार राम करंगे। कार्यक्रम में वीवीआईपी गेस्ट के रूप में साहित्य मनीषी एवं प्रख्यात समाजसेवी डॉ. बी. एल. गौड़ एवं जीटीडीआई के निदेशक डॉ. गौरव गुप्ता, रेडियो भुज के निदेशक डॉ. मुकेश गंभीर वीआईपी अतिथि होंगे। इंटरनेशनल फैशन डिजाइनर सुजाता शर्मा सेलिब्रिटी अतिथि होंगी। जबकि स्पेशल गेस्ट प्रीति बत्रा, कावेरी अंकित काल्याण, सोनिया फॉन्डिस, रीना कटारिया, हिंदू आहुजा मौजूद रहेंगे। कार्यक्रम में गेस्ट ऑफ ऑनर के रूप में आकाशवाणी के सहायक निदेशक रामावतार बैरवा, डॉ. संदीप लोहानी, डॉ. माधव सिंह, आलोक कुमार गुप्ता, एवं अनुभव अरोड़ा विशिष्ट उपस्थिति दर्ज कराएंगे जाएंगे। आयोजक ममता सोनी के अनुसार यह समारोह कला, साहित्य, शिक्षा, समाज सेवा और संस्कृति के क्षेत्र में कार्यरत प्रतिभाओं को सम्मानित करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है, जो समाज में सकारात्मक प्रेरणा का संचार करेगा।



अपर जिला अधिकारी राजेश यादव ने किया सिविल डिफेंस स्थापना दिवस के अवसर पर रक्तदान

परिवहन विशेष न्यूज

मथुरा: नागरिक सुरक्षा विभाग के 63 वा स्थापना दिवस के अवसर पर सिविल डिफेंस मथुरा के प्रभारी अधिकारी एवं अपर जिला अधिकारी नमामि गंगे राजेश यादव के नेतृत्व में नागरिक सुरक्षा साप्ताहिक कार्यक्रम का आयोजन आज से रक्तदान शिविर लगा कर किया गया जिसमें अपर जिला अधिकारी राजेश यादव के द्वारा रक्तदान करके कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया इसी के साथ दिनांक 07 दिसम्बर 2025 को वार्डन पोस्ट संख्या एक पर जिला स्तरीय आपदा प्रबंधन सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता 2025 का आयोजन सिविल डिफेंस मथुरा के पोस्ट वार्डन एवं मास्टर ट्रेनर अशोक यादव के द्वारा 300 बच्चों की प्रतियोगिता जी डी पब्लिक स्कूल औरंगाबाद पर रखी गई है, सिविल डिफेंस के स्थापना दिवस के अवसर पर हर साल की तरह इस बार भी बड़े हॉस्पिटल के साथ मनाए जायेंगे। सिविल डिफेंस कार्यालय पर आयोजित रक्तदान शिविर लगाया गया जिसमें डिविजनल वार्डन भारत भूषण तिवारी डिप्टी डिविजनल वार्डन राजेश कुमार मिश्र, पोस्ट वार्डन रविन्द्र बंसल, अशोक यादव, वरिष्ठ बाबू जगदीश प्रसाद, आलोक कुमार वात्सल्य, राकेश, जवर, रवि पटेल आदि वार्डन एवं स्वयंसेवक मौजूद रहे।



महापरिनिर्वाण दिवस से पूर्व गत वर्ष की भांति डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी की प्रतिमा का विशेष साफ-सफाई अभियान सम्पन्न : विनोद इलाहाबादी

परिवहन विशेष न्यूज

महापौर और नगर आयुक्त सहित शीर्ष अधिकारी कार्यक्रम में होंगे शामिल कार्यक्रम का उद्देश्य समाज के वंचित, दबे-कुचले वर्गों को शिक्षा, समानता और समरसता के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना है, ताकि सामाजिक न्याय की उनकी परिकल्पना को साकार रूप दिया जा सके : विनोद इलाहाबादी

आगरा। संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी के महापरिनिर्वाण दिवस की पूर्व संध्या पर उत्तर प्रदेश स्थानीय निकाय कर्मचारी महासंघ द्वारा आज शाम उनके आदमकद स्मारक परिसर में विशेष साफ-सफाई अभियान चलाया गया। महासंघ के वरिष्ठ प्रदेश उपाध्यक्ष विनोद इलाहाबादी के नेतृत्व में गत वर्ष की भांति डॉ. अम्बेडकर जी प्रतिमा और आसपास के प्रांगण, टाइल्स सहित संपूर्ण क्षेत्र की धुलाई व स्वच्छता सुनिश्चित की गई। इससे पहले विनोद इलाहाबादी ने महापौर माननीया श्रीमती हेमलता दिवाकर कुशवाहा, नगर आयुक्त श्री अंकित खंडेलवाल, अपर नगर आयुक्त श्री शिशिर कुमार यादव तथा सहायक नगर आयुक्त श्रीमती श्रद्धा पांडेय एवं श्री अशोक प्रिय गौतम को 6 दिसम्बर को आयोजित होने वाले श्रद्धांजलि समारोह के लिए औपचारिक आमंत्रण भी प्रदान किया। स्वच्छता अभियान में हरीबाबू वाल्मीकि, सुन्दर बाबू, चंचल मोहन, गुलजार, राजकुमार विद्यार्थी, रोहित लवानिया, रंजीत सिंह नरवार, अनिल राजीविया, मनीष चौहान, कामेश कुंज, रेशम सिंह चाहर, संजु



चौहान, कान्हा ठाकुर, जयकिशन कछवाहे, राहुल नरवार सहित अनेक कार्यकर्ता मौजूद रहे और प्रतिमा परिसर की सफाई में सक्रिय रूप से सहयोग दिया। इस अवसर पर विनोद इलाहाबादी ने बताया कि 6 दिसम्बर की सुबह लगभग 10 बजे डॉ. अम्बेडकर जी के महापरिनिर्वाण दिवस पर महापौर, नगर आयुक्त, अपर नगर आयुक्त तथा महासंघ के पदाधिकारी प्रतिमा स्थल पर पहुंचकर माल्यापण कर श्रद्धांजलि और पुष्पांजलि अर्पित करेंगे। इसके साथ ही विभिन्न राजनीतिक दलों, सामाजिक संगठनों, उत्तर प्रदेश स्थानीय निकाय कर्मचारी महासंघ, नगर निगम कर्मचारी समन्वय समिति आगरा तथा अम्बेडकर जी

अनुयायी विचार मंच द्वारा संयुक्त गोष्ठी का आयोजन किया जाएगा। गोष्ठी में डॉ. अम्बेडकर जी के जीवन, उनके संघर्षों और समाज को दिए गए प्रेरणादायी संदेशों पर प्रकाश डाला जाएगा एवं दबे कुचले समाज को उनके बताये मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया जायेगा जिससे समाज के आखिरी छोर पर खड़ा व्यक्ति शिक्षित होकर समरसता को अप्रसरित हो जाये। कार्यक्रम का उद्देश्य समाज के वंचित, दबे-कुचले वर्गों को शिक्षा, समानता और समरसता के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना है, ताकि सामाजिक न्याय की उनकी परिकल्पना को साकार रूप दिया जा सके।

जैसे मोदी के राम वैसा उनका राम राज्य !!

(आलेख : बादल सरोज)

उधर : 25 नवम्बर को अयोध्या में 22 महीने पहले 'प्राण प्रतिष्ठित' किये जा चुके मन्दिर पर पूरा कुनवा इती चौड़ाई और उती लम्बाई का भगवा ध्वज फहरा कर हिन्दू राष्ट्र के निर्माण की ओर कदमचाल तेज कर रहा था और उधर : उसी दिन, लगभग उसी समय मध्यप्रदेश की संस्कारधानी कहे जाने वाले जबलपुर में भगवा ध्वज धारण में लिए कुछ 'वीर और वीरगणवार्थे' हिन्दू राष्ट्र के नाम पर लाठी तलवारों और न जाने क्या-क्या अस्त्र-शस्त्र लेकर एक धरने से लौट रहे लोगों को मार, पीट और घसीट रहे थे।

धरना देने वाले दो रोज पहले सम्राट अशोक – भारत के इतिहास के एक महत्वपूर्ण शासक – के नाम पर लगी साहित्य प्रदर्शनी पर इसी गिरोह द्वारा हल्ला बोले जाने, संविधान सहित भारतीय सभ्यता के अलग-अलग कालखंडों को बयान करने वाली, भारतीय वांग्मय की धरोहर मानी जाने वाली किताबें नष्ट किये जाने का विरोध और देशियों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर धरना दे रहे थे। दोनों ही हमले ठीक पुलिस कण्ट्रोल रूम और थाने के एकदम करीब और इस तरह मप्र पुलिस की निगहबानी और निगरानी में हुए।

जबलपुर बहुत कुछ खासियतों के साथ मप्र उच्च न्यायालय का मुख्यालय होने की विशेषता रखता है और इसीलिये स्वयं को न्याय का प्रांगण भी समझता है। ऐसे जबलपुर में इतना सब घटता रहना और संविधान, लोकतंत्र, कानून व्यवस्था और बाकी सबका हाथ पर हाथ धरे रहना देखने वाले को है : यह उसी दिन अयोध्या में फहराए गए ध्वज की छाया में रची जा रही भविष्य की झांकी है।

अयोध्या में भगवा ध्वज फहराते हुए अत्यंत अलंकृत और प्रांजल हिंदी में मोदी जिस रामराज्य की बात कर रहे थे, वह गांधी का रामराज्य नहीं था। गांधी कहते थे कि "मैं पठानों के बीच जाता हूँ, तो खुद के राज की बात करता हूँ, इसाईयों के बीच गाँठ के राज की बात करता हूँ : मेरे लिए रामराज्य का मतलब धार्मिक राज्य नहीं है। मेरे रामराज्य का अर्थ एक आदर्श, न्यायपूर्ण, अहिंसक और लोकतांत्रिक समाज है, जिसमें सत्य, अहिंसा, समानता और सदागी प्रमुख हों। जहाँ सरकारी का उद्देश्य जनता की सेवा करना हो।" उन्होंने कहा था कि "किसी देश में

यदि सारे के सारे लोग एक ही धर्म को मानने वाले हों, तब भी उसे धर्म के नाम पर नहीं चलाया जाना चाहिए।"

मोदी अयोध्या में जिस रामराज्य की बात कर रहे थे, वह हिंदी पट्टी में राम को घर-घर पहुंचाने वाले गोस्वामी तुलसीदास का "दैहिक, दैविक, भौतिक तापा/ रामराज काहुहि नहीं व्यापा" वाला वह रामराज्य भी नहीं था, जिसे परिभाषित करते हुए उन्होंने रामचरित मानस के अयोध्या काण्ड में लक्ष्मण को समझाते समय राम के मुँह से कहलवाव्या है कि "जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी / सो नृप अवसि नरक अधिकारी"।

यह चाणक्य का 'प्रजा सुखे, सुखं राजे' 1– प्रजा के सुख में ही राजा का सुख है, वाला राम राज्य भी नहीं था।

वे जिस रामराज्य की दुहाई देकर उसे राम के साथ जोड़कर स्वीकार्य बनाने की कोशिश कर रहे थे, वह वही हिन्दू राष्ट्र है, जिसे 1947 में इस देश के अपार बहुमत ने ठुकराया था और जिसे देश ने अपने 7 हजार वर्षों के लिखित इतिहास में कभी स्वीकार नहीं किया। यह रभारत टैट इंड इंडियाह यानी हिन्दोस्तान में रची-बसी समावेशी सहजीवन की विरासत वाला नहीं, आरएसएस की अभारतीय धारणा वाला रामराज्य है।

इस राम-राज्य के लिए जिन राम को गढ़ा गया है, वे राम भी बाल्मीकि या तुलसी के राम नहीं है, सहज, सरल, वीतरागी और मर्यादा मानने वाले राम तो बिलकुल नहीं है : प्रत्यंचा ताने क्रोधित ऐसे राम हैं, जिनका दो सी से अधिक रामायणों में किसी भी रामकथा के किसी भी अध्याय, सर्ग, सोरटे या चौपाई में जिक्र तक नहीं मिलता। ये मोदी और उनके कुनबे के राम हैं।

हालांकि होने को तो जिसे वे राम का ध्वज बता रहे थे, वह ध्वज भी राम का नहीं है। जब कुनबा बहुत छोटा था, उस वक़्त इस हिन्दूराष्ट्री धारा के बड़े रहे रामराज्य परिपक्व के सर्वेसर्वा करपात्री जी महाराज ने अनेक बार कहा और लिखा है कि "भगवा आरएसएस संगठन के ध्वज का रंग है। उसे समूचे सनातन धर्म का प्रतीक मान लेना गलत है। वेद-पुराण-शास्त्र में कहीं भी इस बात का प्रमाण नहीं है। भगवा सप्तसप्त सनातन हिंदू धर्म का प्रतीक है!" कभी बात के समर्थन में उन्होंने राम-रावण युद्ध से

महाभारत में कृष्ण सहित अलग-अलग लोगों के अलग-अलग ध्वजों सहित कई पौराणिक उदाहरण भी दिए थे।

इस तरह किसी धर्माचार्य या धर्मगुरु की दिखावटी मौजूदगी के बिना संघ के प्रमुख डॉ. मोहन भागवत की उपस्थिति में करपात्री जी के शब्दों में संघ के रंग वाले ध्वज में कोविदार का वृक्ष और थोड़ा सा श्रृंगार जोड़कर जो फहराया गया, वह उन्हीं के 'संकल्पों, सपनों' वाला राज; हिन्दू राष्ट्र है!! 'सत्य की महता, समता और सामाजिक सदभाव' के विशेषणों के साथ वे जिस उत्पाद को बेच रहे थे, वह ठीक उसके उलट गुण धर्म वाला फासीवाद का भारतीय संस्करण है। एक रंगी, एकरस, एकांगी समाज वाला राष्ट्र, जो रंग-बिरंगी, समावेशी, विविधताओं में गुंथे 'अनेकता में एकता' के प्रतीक अलाव तक के भारत को संगठित में नहीं, उसका एकदम विलोम है। एक ऐसा राष्ट्र जो धर्मसम्मत नहीं, मनुसम्मत है : एक ऐसा समाज जहां 'वादे वादे जायते तत्त्वबोधे' प्रतिबंधित है।

प्रधानमंत्री मोदी ने संघ प्रचारक के नाते दिए अपने भाषण में कई सदियों बाद गुलामी से मुक्ति के जिस जागरण की बात की, वह आधुनिकता की ओर ले जाने वाला रेनेसांस – नवजागरण – नहीं है, यह पीछे की ओर, अंधेरे के काल में वापस ले जाने वाला रिवाइवलिज्म – पुनरोत्थान – है। उनका प्राचीन और पुरातन गौरव और परम्परा भी चुनिन्दा है। उसमें धरती के इस हिस्से पर जन्मा समूचा प्रबोधन भी नहीं है। वे विचार नहीं है, जिन्होंने समय-समय पर सामाजिक जड़ता को तोड़ने और जहालत के झंझड़-झंखाड़ साफ करने के औजारों की भूमिका निबाही। समाज को बुद्धि और विवेक, तर्क और संवाद, ज्ञान और विश्लेषण का सलीका दिया और इस तरह नये सृजन, आविष्कार और अनुसंधानों के लिए राह खोली।

जबलपुर में उसी की एक झांकी मंचित की जा रही थी। यहाँ जिन किताबों को "देवी देवताओं के बारे में की गयी अपतजिजनक टिप्पणियों" वाली बताकर उत्पात मचाया गया, वे धरा के इस हिस्से पर जन्मे और दुनिया के बहुत बड़े हिस्से को प्रभावित करने वाले असाधारण मनीषी गौतम बुद्ध और उनकी विचार-परम्परा की अग्रदूतों हैं। इस देश में शिक्षा और सामजिक क्रान्ति के अग्रदूतों में से एक

जोतिबा फुले और आधुनिक भारत के शिल्पकारों में से एक डॉ. बी आर अम्बेडकर का साहित्य था। उनकी 'रिटल्स ऑफ हिन्दुज्म' तथा 'एनिहिलेशन ऑफ कास्ट' जैसी किताबें थीं। गरज यह कि भारतीय विमर्श का वह हिस्सा, जिसने जड़ता को तोड़ने और अंधेरे को काफी हद तक चीरने में युगांतरकारी भूमिका निबाही है, ठीक वही इनके निशाने पर है।

यह मानना गलतफहमी होगी कि यह आधार सिर्फ बुद्ध, महावीर, जोतिबा या अम्बेडकर भर पर लागू होगा, इसके दायरे में श्वसनवेद, मांडूक्य और छान्दोग्य जैसे आधे से अधिक उपनिषद् और दो-ढाई के अलावा बाकी का षडदर्शन और सारे का सारा आधुनिक सृजन आयेगा। इनके पहले वाले पहले भी ऐसा कर चुके हैं, जिन्होंने बाकियों की तो छोड़िये, ऋग्वेदिक देवताओं के गुरु वृहस्पति को भी नहीं बख्शा। और उनका लिखा चिंदी-चिंदी बिखेर दिया।

विदेशी गुलाम मानसिकता और विदेशी विचारों की घुसपैठ को खत्म करने की बात असल में कुछ हजार वर्षों में हासिल सभ्य समाज की स्थिति को उलटने की कोशिश है। यह बात कहाँ तक जायेगी, इसका संकेत स्वयं उन्होंने लोकतंत्र और संविधान को विदेशी बताकर जाहिर कर दिया है। लार्ड मैकाले के बहाने जो कहा गया और जिस महान भारतीय शिक्षा परम्परा की बहाली का संकेत दिया गया, वह कैसी थी, किन्तु के लिए थी, कितनी थी, इसके उल्लेखों से ग्रन्थ के ग्रहण बंद हुए हैं। इस वर्णाश्रम आधारित शिक्षा की महानता दिखाने के लिए आईटी सैल के जरिये सन 1811 में साढ़े सात लाख गुरुकुलों के होने का बेबुनियाद दावा किया जाता है। मगर सचाई आंकड़ों से बयान होता है।

आंकड़े ये बताते हैं कि 15 अप्रैल 1947 को भारत की साक्षरता दर केवल 12% थी। 1951 में हुई पहली राष्ट्रीय जनगणना में साक्षरता दर 18.33% दर्ज की गई। महिला साक्षरता दर और भी कम, केवल 8% थी और हर तीन बच्चों में से केवल एक को ही प्राथमिक विद्यालय में नामांकन का अवसर मिलता था। उच्च स्तर की शिक्षा के हाल तो और भी खराब थे। 15 अगस्त 1947 को भारत में कुल 636 कॉलेज थे। विश्वविद्यालयों की संख्या को लेकर अलग-अलग स्रोतों में थोड़ी भिन्नता है,

22 प्रतिज्ञाएँ लीं और लाखों लोगों को बौद्ध धर्म ग्रहण कराया, वह केवल धर्म परिवर्तन नहीं था—वह सदियों की दासता, अपमान और अन्याय का महासंस्कार था। और दो महीने बाद जब वे शांत हुए, तब भी एक संदेश छोड़ गए—मैं बौद्ध धर्म इसलिए चुना क्योंकि वह बराबरी, करुणा और विज्ञान पर आधारित है। आज जब हम महापरिनिर्वाण दिवस मनाते हैं, प्रश्न यह नहीं कि बाबासाहेब हमारे बीच नहीं हैं—प्रश्न यह है कि क्या हम उनके विचारों के बीच खड़े हैं? जिस संविधान की रक्षा के लिए उन्होंने जीवन खपा दिया, आज उसी पर बार-बार हमले हो रहे हैं। जिस समता की परिकल्पना उन्होंने की, आज वही समता खोखली करने की कोशिशें झेल रही है। आरक्षण पर फैलाया जाने वाला हर झूठ, उनके संघर्ष की नींव पर लुटा गया हमला है। उन्होंने स्पष्ट कहा था—आरक्षण कोई भीख नहीं, वह प्रतिनिधित्व का अधिकार है। फिर भी आज सवाल पूछा जाता है—“आरक्षण कब तक?” जवाब साफ है—जब तक जाति है, जब तक भेदभाव है—तब तक आरक्षण रहेगा। और यदि कोई इसे खत्म करना चाहता है, तो पहले इस देश से जाति को खत्म करे।

बाबासाहेब ने शिक्षा को केवल मार्ग नहीं, मुक्ति का सबसे बड़ा हथियार कहा। "शिक्षित नहीं" उनका पहला धर्म अनाते हुए कहा था—सब सपनों के सहारे लाखों—करोड़ों डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, प्रोफेसर तैयार हो रहे हैं। लेकिन सच यह भी है कि गाँवों में अब भी दलित बच्चियाँ स्कूल जाने से पहले दूसरों के घरों की देहलीज पर झाड़ू लगाती दिखती हैं।

लेकिन तब भी यह संख्या 17 से 20 के बीच ही रहती है, जिनमें कुछ प्रमुख ब्रिटिश काल के दौरान स्थापित हुए थे। इनमें पढ़ने वाले छात्र सिर्फ सवा दो लाख के करीब थे। यह आजादी के बाद –स्वतन्त्रता आन्दोलन में उठी मांगों और जनतांत्रिक हस्तक्षेप का नतीजा था कि 2011 की जनगणना में साक्षरता दर बढ़कर 74.04% हो गई है।

वे क्या करना चाहते हैं, यह उस नई शिक्षा नीति से साफ दिखाई देता है, जिसे इनके राज में लाया गया है। डार्विन सहित वैज्ञानिकों का तिरस्कार, शिक्षा को अंधविश्वास से भरकर, फलित ज्योतिष से लेकर अच्छी पत्नी कैसे बनें, जैसे विषय और मनु का महात्म्य विषयों में जोड़कर अभी उसकी दिशा बदली जा रही है। सार्वजनिक खर्च को सिकोड़ कर उस तक पहुँच बाधित की जा रही है। विश्वविद्यालय पर हर तरह के हमले किये जा रहे हैं : इनके चलते दिल्ली विश्वविद्यालय जैसे शिक्षा संस्थानों की दुर्गा की खबरें सामने आने लगी हैं।

लार्ड मैकाले उस जमाने के औपनिवेशिक प्रशासन को चलाने के लिए जिस तरह प्रशिक्षित भारतीयों की आवश्यकता थी, उस तरह की शिक्षा प्रणाली लाये थे। मगर उसी शिक्षा को हासिल करने वालों ने दुनिया को देखना-समझना शुरू कर दिया। आधुनिकता का बोध और विश्लेषण का विवेक पाया। वे ही आगे चलकर उसी औपनिवेशिक सत्ता को खत्म करने वाली लड़ाई के नायकों में शामिल हुए। मोदी और उनका कुनबा उस निशाने पर लेकर बार फिर भारत के अवागम को नागरिकता बोध से वंचित प्रजा में बदलना चाहते हैं। यह ध्वज उसी की शुरुआत का शंखनाद करता है।

मानव समाज का इतिहास गवाह है कि इस तरह के ध्वज जब-जब उठे हैं, तब-तब मनुष्यता आगे की दिशा में नहीं बढ़ी, पीछे की ओर ही फिसली है। पता नहीं, मोदी और कुनबे को पता है कि नहीं पता कि धर्मव्यवस्था का शाब्दिक अर्थ भी वही है, जो वे उसे उठाकर-दिखाकर कर रहे हैं।

कोई 135 वर्ष पहले 1890 में भाषाविद वामन शिवराम आपटे द्वारा रचे गए पहले संस्कृत-अंग्रेजी और उसके बाद संस्कृत-हिंदी के शब्दकोष में इसका अर्थ 'धर्म के नाम पर पाखंड रचने वाला, छद्मवेशी' बताया गया है। यही बात मौनियर विलियम्स

के ऑक्सफ़ोर्ड प्रेस द्वारा 1899 में प्रकाशित संस्कृत-अंग्रेजी शब्दकोष में भी दर्ज है, जिनके मुताबिक धर्मव्यवस्था का अर्थ 'दिखावा करने में सिद्धहस्त, पाखंडी और कपटी' होता है। 25 नवम्बर को अयोध्या में यही हो रहा था – जबलपुर में उसके सार को अमल में लाया जा रहा था।

वे जिस "गौरवशाली अतीत" की ओर वापस ले जाकर जिस "महान हिन्दू एकता" वाला राष्ट्र स्थापित करना चाहते हैं, उसका आधार खुद उनके मुताबिक मनुस्मृति पर आधारित सामाजिक ढांचा होगा। उन्हें उससे एक मिलीमीटर कम मंजूर नहीं है। मनुस्मृति क्या कहती है, यह दोहराने की आवश्यकता नहीं – हाल के दिनों में इसके बोलवचन चर्चाओं में आते रहे हैं : तब भी एक वाक्य में कहे, तो एक ऐसा समाज, जहाँ अधिकार वर्णों के आधार पर निर्धारित और नतीजे में सारी महिलायें और आबादी के विराट हिस्से अधिकारों से वंचित होंगे : उनके हिस्से में सिर्फ कर्तव्य आयेगा। मोदी ने अपने पूरे भाषण में इसीलिए कहीं भी अधिकार का शब्द नहीं उच्चार, जब भी बोला, कर्तव्य ही याद दिलाया।

ऐसा समाज भारत देख चुका है और इसकी भारी कीमत अदा कर चुका है। साफ है कि इस बात का सीधे-सीधे इस्लाम या इसाइयत के साथ कोई संबंध नहीं है, असली एजेंडा तो समाज के उस हिस्से का पुनर्गठन है, जो मोटा-मोटी उस धार्मिक पहचान का है, जिसे 'हिन्दू' कहा जाता है। हिन्दू कहने में भी एक झोल है, इसलिए कुनबा इन दिनों उसकी जगह सनातनी कहने लगा है।

अब इस बड़ी और आभासीय छतरी के नीचे खुद को खड़ा मानकर, जिन्हें जितने भी झाड़ू-मंजरी बजाना है बजा लें, कितने भी त्रिपुंड लगाना है, लगा लें, रहना वहीं है, जहाँ रहने की मनु महाराज ने कही है। धर्मध्वज लहराने वाले सबकी समानता, बराबरी, समता और नागरिकता को विदेशी अवधारणा पर आधारित गुलाम मानसिकता मानते हैं। उनके द्वारा स्थापित किये जाने वाले हिन्दू राष्ट्र में सारे हिन्दूओं के बराबर होने का मुग़ालता जिनने पाला है, वे जानें, कुनबे ने तो ऐसा कभी कहा नहीं।

(लेखक 'लोकजतन' के संपादक और अखिल भारतीय किसान संघ का संयुक्त सचिव हैं।)

'ओडिया अस्मिता' का क्या मतलब है? संस्कृति मंत्री ने विधानसभा में जवाब दिया

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओडिशा

भूवनेश्वर : कांग्रेस पार्टी के नेता रामचंद्र कदम ने पूछा कि 'ओडिया अस्मिता' का क्या मतलब है, पिछले डेढ़ साल में ओडिया अस्मिता के लिए कितना पैसा दिया गया है और इस पैसे में से कितना पैसा किस पर खर्च किया गया है और 'ओडिया अस्मिता' के लिए भविष्य की क्या योजनाएं या काम हैं? ओडिया अस्मिता का क्या मतलब है? कांग्रेस विधायक दल के नेता के सवाल का जवाब संस्कृति मंत्री ने दिया। विधानसभा में ओडिया भाषा,



साहित्य और संस्कृति मंत्री सूर्यवंशी सूरज ने जवाब देते हुए कहा कि अस्मिता एक आत्मज्ञान, अहंकार ज्ञान, मैं सोचता हूँ, मैं हूँ - यह

भावना, आत्म-पहचान भी है। ओडिया विरासत को फिर से ज़िंदा करने और ओडिशा की कला, आर्किटेक्चर, साहित्य, संस्कृति और विरासत को बढ़ावा देने के मकसद से, ओडिया भाषा, साहित्य और संस्कृति विभाग ने ओडिया विरासत के लिए 200 करोड़ रुपये का एक खास फंड बनाया है। सरकार की मंजूरी से, ओडिशा ब्रिज एंड कंस्ट्रक्शन कॉर्पोरेशन (OB&CC) ने राज्य में ओडिया अस्मिता धवन बनाने के लिए जरूरी कदम उठाए हैं।

सप्तगिरी ने डीआरएम ऑफिस के लिए विशाखापत्तनम के बजाय रायगढ़ से ऑपरेशन की मांग की



ने लोकसभा में की है। उन्होंने कहा कि रायगढ़ डिवीजन की घोषणा और DRM होने के कारण इसका सारा काम विशाखापत्तनम में होने से यहां कई डेवलपमेंट के कामों में देरी हो रही है। इसलिए MP सप्तगिरी ने संसद में इस पर तुरंत कदम उठाने की मांग की। उन्होंने कहा कि दिन में कोरापुट से भुवनेश्वर तक रायगढ़ होकर ट्रेनें चलाने की बर-बार मांग की जा रही है, लेकिन इसे अहमियत नहीं दी जा रही है। उन्होंने कहा कि इससे अविभाजित कोरापुट जिले के लोगों को फायदा होगा।

क्यों है मोदी-पुतिन की मुलाकात पर पूरे विश्व की नजर

राजेश कुमार पासरी

रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन दो दिन को भारत यात्रा पर आ गए हैं और पूरी दुनिया उनकी यात्रा को बड़े ध्यान से देख रही है। इस यात्रा को सामान्य मेलजोल की यात्रा नहीं कहा जा सकता क्योंकि इस समय पश्चिमी देश रूस को अलग-थलग करना चाहते हैं लेकिन दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में उनका जबरदस्त स्वागत किया जा रहा है। विश्व मीडिया इस परेशानी को व्यक्त भी कर रहा है और कह रहा है कि पुतिन का भारत में जबरदस्त स्वागत किया जा रहा है। वैश्विक मीडिया बोल रहा है कि भारत में उनकी तस्वीर बनाई जा रही हैं, उनकी आरती उतारी जा रही है। एक तरह से देखा जाए तो यह संदेश जा रहा है कि पुतिन का स्वागत केवल सरकारी स्तर पर नहीं किया जा रहा है बल्कि भारतीय जनता भी उसे बड़ा महत्व दे रही है। वास्तव में भारत और रूस की दोस्ती दोनों देशों की जनता की भावनाओं से जुड़ी हुई है। भारतीय जनता में यह आम धारणा है कि भारत के साथ हर संकट में खड़ा रहा है। यही कारण है कि पीएम मोदी ने सारे प्रोटोकॉल तोड़कर उनका एयरपोर्ट पर स्वागत किया है। कई सुरक्षा भेरे में रहने वाले पुतिन मोदी के साथ उनकी गाड़ी में बैकवर प्रधानमंत्री निवास गए हैं। इससे पूरी दुनिया को मोदी और पुतिन की दोस्ती की गहराई का अहसास हो रहा है जो कि वास्तव में दो नेताओं के बीच नहीं बल्कि दो देशों के बीच है। पश्चिमी मीडिया कह रहा है कि पुतिन एक युद्ध अपराधी हैं लेकिन भारत उनका रेट कापेट वेलकम कर रहा है। अमेरिकी मीडिया कुछ अलगा ही राग गा रहा है. उसका कहना है कि यह सब डोनाल्ड ट्रंप की असफल विदेश नीति के कारण हो रहा है। अमेरिकी मीडिया का कहना है कि ट्रंप ने पाकिस्तानी प्रेम में पड़कर हद से ज्यादा भारत विरोधी कदम उठाए हैं, जिसके कारण भारत रूस के ज्यदा नजदीक चला गया है। पश्चिमी मीडिया के अनुसार जो ज्यादा महत्व नहीं देता है लेकिन भारत की भारत यात्रा को उसने ऊपर ऊपर रखा है, हालांकि वो इस यात्रा को नकारात्मक दृष्टि से देख रहा है। यूरोप के बड़े न्यूज नेटवर्क फ्रांस-24 पर इस यात्रा को लेकर बड़ा कार्यक्रम किया गया है जिसमें विस्तृत रूप से दोनों देशों के संबंधों पर चर्चा की गई है। इस चर्चा में बताया गया है कि दोनों देशों के बीच कैसे समझौते हो सकते हैं। इन समझौतों का यूरोप पर क्या अरप हो सकता है। वैश्विक मीडिया भारत और रूस की दोस्ती को बहुत महत्व दे रहा है क्योंकि उसे लगता है कि दोनों देशों की मित्रता पूरे विश्व को प्रभावित करने वाली है। पुतिन भी जानते हैं कि उनकी यात्रा को विश्व में कैसे देखा जा रहा है। उन्होंने कहा है कि भारत की तरक्की कई देशों को चुभ रही है। उन्होंने कहा है कि भारत एक ग्रेट पावर है और पीएम मोदी किसी के दबाव में नहीं आते हैं। उन्होंने माँस्क़ो में आजतक को दिए साक्षात्कार में भारत-रूस संबंधों पर अपने दिल की बातें कही हैं।

आरक्षण पर सवाल नहीं, जाति पर सवाल उठाने का समय है

चैत्यभूमि पर कदम रखते ही एक अजीब-सी हलचल सी अंदर उठती है—जैसे यह धरती अपनी गूँज में कह रही हो, "यहीं से जन्मी थी इसान की गरिमा और न्याय की नई कहानी।" समुद्र की हवा भी उस पल में सामान्य नहीं लगती: उसमें एक गंभीरता, एक सम्मान, एक अडिग सन्नाटा घुला होता है। और फिर अचानक आपके सामने खुलता है वह महासागर—नीली किताबों का, नीले झंडों का, उन चेहरों का जिनकी आँखों में आँसू नहीं, सदियों का संघर्ष बोलता है। 'जय भीम' की गर्जना कोई नारा नहीं लगती; वह स्मरण है उस क्रांति का, जिसने टूटे हुए मनुष्य को फिर से मनुष्य बनाया। यह एक क्रांति का वाषिंक पुनर्जन्म है। यह उस दिन की स्मृति है जब 6 दिसंबर 1956 को दिल्ली के 26 अलीपुर रोड पर डॉ. बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर की सीसें धर्मी, पर उनके विचार भारतीय संविधान की नसों में अमर होकर डारने लगे।

उन्होंने मरकर भी मरना स्वीकार नहीं किया। वे अंतिम सांस तक लड़ते रहे—जाति की जंजीरों से, लुआडूत की घृणा से, अंधविश्वास की काली सुरों से, और सबसे कठिन युद्ध—अज्ञान की दीवारों से। जिस समाज ने उन्हें पानी तक न छूने दिया, उसी समाज को उन्होंने दुनिया का सबसे आधुनिक और मानवतावादी संविधान साबित फिर ऊँचा करने का अवसर दिया। जिस समाज ने मंदिर के दरवाजे बंद किए, उसी समाज को उन्होंने बुद्ध की शरण में ले जाकर दिया। तर्क और समानता का खुला आकाश दे रिया। 14 अक्टूबर 1956—नागपुर की दीक्षाभूमि पर जब उन्होंने

परंतु उनकी जवाबदेही अक्सर केवल चुनावी परिणामों या राजनीतिक आलोचनाओं तक सीमित रह जाती है। यदि इनके दायित्वों और निर्णयों का नियमित आकलन एक संस्थागत प्रक्रिया के अंतर्गत हो, तो शासन न केवल अधिक पारदर्शी होगा बल्कि जनता के प्रति अधिक उत्तरदायी भी बन सकेगा।

मंत्रियों की कार्य-रिपोर्ट तैयार करने का विचार शासन के उस बुनियादी सिद्धांत को मजबूत करता है, जिसमें कार्यपालिका को अपनी प्रत्येक गतिविधि का तर्कसंगत विवरण देना होता है। एक व्यवस्थित रिपोर्ट मंत्री को बाध्य करती है कि वह अपने विभाग की वास्तविक स्थिति, योजनाओं की प्रगति, वित्तीय उपयोग, चुनौतियों का मांयदेही का संचालन करने तक सीमित नहीं होती, बल्कि वे विधायी नैतिकता और संसदीय मर्यादाओं के संरक्षक भी होते हैं। उनकी समीक्षा एक निष्पक्ष, संतुलित और राजनीतिक प्रभाव से मुक्त प्रत्येकानु प्रस्तुत करती है।

जवाबदेही की नई राह : मंत्रियों की कार्य-रिपोर्ट और सदन अध्यक्ष द्वारा समीक्षा

(मंत्रियों के कार्य-काज की नियमित रिपोर्ट तैयार की जाए रिपोर्टों की समीक्षा सदन के अध्यक्ष द्वारा की जाए। प्रक्रिया से पारदर्शिता, कार्यक्षमता और जवाबदेही बढ़ेगी। लोकतांत्रिक नियंत्रण और तटस्थ मूल्यांकन से संस्थागत रूप मिलेगा।)

ई संस्यवान सौरभ

लोकतंत्र की सफलता केवल जनता की भागीदारी पर निर्भर नहीं करती, बल्कि इससे भी अधिक इस बात पर आधारित होती है कि शासन-तंत्रकिताब जवाबदेह, पारदर्शी और परिणामोन्मुख है। भारत जैसे विशाल और बहुस्तरीय लोकतंत्र में यह प्रश्न कई गुना अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है कि क्या मंत्री—जो विभिन्न मंत्रालयों के शीर्ष प्रशासक हैं—अपने विभाग के कार्य, नीतियों और दैनिक प्रशासनिक निर्णयों के प्रति पर्याप्त रूप से उत्तरदायी हैं? समय-समय पर यह चिंता व्यक्त की जाती रही है कि शासन में पारदर्शिता की कमी, जवाबदेही का अभाव और नीतिगत असम्पत्त जैसी समस्याएँ निर्णय-प्रक्रिया को कमजोर करती हैं।

इन्हीं परिस्थितियों में यह विचार उभरता है कि मंत्रियों के कार्य-काज की नियमित रिपोर्ट तैयार की जाए और उसकी समीक्षा सदन के अध्यक्ष द्वारा की जाए। यह प्रस्ताव मात्र प्रशासनिक सुधार नहीं है; यह लोकतांत्रिक व्यवस्था में शक्ति-संतुलन, नैतिक जिम्मेदारी और जन-विश्वास को सुदृढ़ करने की दिशा में उठाया गया महत्वपूर्ण कदम है।

भारत की संसदीय धार्मिक संरचना में कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका के बीच संतुलन अत्यंत महत्वपूर्ण है। कार्यपालिका के रूप में मंत्री शासन-व्यवस्था की धुरी होते हैं।

विश्वविद्यालयों में अब भी दलित छात्रों को अपमान और अत्याचार की आग में धकेला जाता है—कभी-कभी इतनी गहरी कि वह जीवन छीन लेती है। यह सिर्फ बाबासाहेब का नहीं, हमारी पूरी सभ्यता का अपमान है। यह हमारी सामूहिक नाकामी है कि हम अभी तक उनके सपनों का भारत नहीं बना पाए।

महापरिनिर्वाण दिवस केवल श्रद्धांजलि का संस्कार नहीं—यह आत्मा को झकझोर देने वाला आत्ममंथन है। यह दिन हम उनके विचारों के बाबासाहेब की जलायी हुई मशाल अभी बुझी नहीं; वह आग हमारे भीतर जलनी चाहिए। जब तक जाति के नाम पर एक भी इंसान का आत्मसम्मान कुचला जाता है, तब तक बाबासाहेब की आत्मा को नहीं मिलने वाला। उन्होंने कहा था—“मैं ऐसी पार्टी बनाऊँगा जो कमजोरों की होगी।” आज जरूरत है कि हम उस विचार को सिर्फ चुनावी पोस्टर न बनाएँ, बल्कि उसे एक आंदोलन, एक मिशन, एक प्रतिज्ञा बनाएँ।

6 दिसंबर को चैत्यभूमि जाना महत्वपूर्ण है, पर उससे भी अधिक महत्वपूर्ण है उस नीली किताब को फिर से खोलना। संविधान को पढ़ना—उसकी प्रस्तावना को ऊँची आवाज में दोहराना—“हम भारत के लोग...” और यह संकल्प लेना कि इस “हम” से कोई भी बाहर न धकेला जाए—न जाति से, न धर्म से, न लिंग से। बाबासाहेब ने बौद्ध धर्म अपनाते हुए कहा था—“मैं जन्म से हिंदू पैदा हुआ था, पर मैं हिंदू होकर मरूँगा नहीं।” आज हमें भी यही प्रतिज्ञा लेनी है— कि हम जन्म से जो भी हों, पर अन्याय, भेदभाव, और असमानता के सामने झुककर कभी नहीं मरेंगे।

यह दिन हमें याद दिलाता है कि बाबासाहेब कोई दैवी शक्ति नहीं, बल्कि अपनी दृढ़ इच्छा, बुद्धि और संघर्ष से महान बने हुए एक साधारण जन्मे असाधारण इंसान थे। एक ऐसा इंसान जो दर्द से टूटा, लेकिन उसी दर्द को हथियार बनाकर उठ खड़ा हुआ। एक ऐसा इंसान जिसकी शक्ति, जिसकी पढ़ाई, जिसकी बैचनी और जिसकी संघर्ष-भरी रातें—लाखों लोगों की सुबह बन गईं। हम उनकी जयंती पर नारे बहुत लगाते हैं, लेकिन उनकी पुण्यतिथि हमें खामोशी में खुद से सबसे कठिन सवाल पूछने पर मजबूर करती है—हमने उनके लिए क्या किया? क्या हम सच में उनके विचारों के वारिस हैं, या सिर्फ उनके नाम को इस्तेमाल करने वाले सुविधाजनक वारिस?

जब इस देश में एक भी व्यक्ति अपनी जाति की वजह से अपमानित होता है—समझ लींएज, बाबासाहेब का परिनिर्वाण पूरा नहीं हुआ। उनका वास्तविक महापरिनिर्वाण तभी होगा जब जाति की अंतिम धुँगरि गिर जाए। एक समाज सचमुच धरती पर उतरेगी, जब संविधान सिर्फ किताब नहीं, जीती-जागती जिंगी बन जाएगा। तब तक बाबासाहेब जीवित हैं—हमारी लड़ाई में, हमारी आवाज में, हर "जय भीम" की प्रतिध्वनि में। इसलिए इस 6 दिसंबर को सिर्फ फूल चढ़ाने मत जाना—अपने भीतर की जाति को मारने जाना। अपने भीतर के मनुवाद को अगि न देने जाना। और लौटते समय यह संकल्प लेकर आना— कि अबकी बार, बाबासाहेब का सपना पूरा करके रहेंगे। जय भीम। जय भारत। जय संविधान।

प्रो. आरके जैन "अरिजिती", बड़वासी (मप्र)

जवाबदेही की नई राह : मंत्रियों की कार्य-रिपोर्ट और सदन अध्यक्ष द्वारा समीक्षा

पद की स्वतंत्रता जिम्मेदारी के साथ जुड़ी होती है, उससे अलग नहीं होती। जब एक मंत्री जानता है कि उसके प्रत्येक निर्णय का औपचारिक दस्तावेज बनकर समीक्षा के लिए जाएगा, तो वह नीतिगत गंभीरता और प्रशासनिक अनुशासन को और मजबूत रूप से अपनाता है।

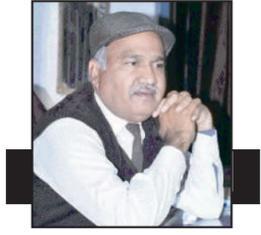
इसके साथ ही, एक ऐसी रिपोर्टिंग व्यवस्था शासन में निरंतरता भी सुनिश्चित करती है। मंत्रालयों में मंत्रियों का परिवर्तन सामान्य प्रक्रिया है, परंतु अक्सर नीतियाँ इसी संक्रमण में कमजोर पड़ जाती हैं क्योंकि नई नेतृत्व टीम को पिछली प्रगति की सटीक जानकारी नहीं मिल पाती। नियमित रिपोर्टें इस समस्या का समाधान प्रस्तुत करती हैं। इससे शासन में न केवल पारदर्शिता बढ़ती है बल्कि नीतिगत निरंतरता और प्रशासनिक स्थिरता भी सुनिश्चित होती है।

दुनिया के कई लोकतांत्रिक देशों में ऐसी व्यवस्थाएँ पहले से मौजूद हैं। ब्रिटेन, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड जैसे देशों में मंत्रियों की नियमित रिपोर्टें संसद या उसकी समितियों के समक्ष प्रस्तुत की जाती हैं। यह प्रक्रिया दिखाती है कि जवाबदेही केवल राजनीतिक आलोचना का विषय नहीं है, बल्कि शासन के एक अनिवार्य अंग है। भारत में यदि यह प्रणाली लागू होती है, तो यह वैश्विक मानकों के अनुरूप एक आधुनिक और पारदर्शी प्रशासनिक ढाँचा स्थापित करने की दिशा में बड़ा कदम होगा।

ऐसी रिपोर्टिंग प्रणाली का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष जनता का अधिकार है। भारत में नागरिक बार-बार यह भावना व्यक्त करते हैं कि शासन-तंत्र उनके प्रति पर्याप्त रूप से पारदर्शी



स्क्रीन पर कौन चिपका हुआ है? (बुजुर्ग और साइलेंट डिजिटल सर्फ)



डॉ. विजय गर्ग

एक स्क्रीन में डूबे हुए व्यक्ति की छवि अक्सर एक किशोर या युवा वयस्क को याद दिलाती है, लेकिन एक नया चलन उभर रहा है: वरिष्ठ लोग तेजी से अपनी स्क्रीन पर चिपके हुए हैं, अभूतपूर्व उत्साह के साथ डिजिटल जीवन को गले लगा रहे हैं। यह बदलाव बुजुर्गों को समर्पित डिजिटल उपयोगकर्ताओं के तेजी से बढ़ते समूह में बदल रहा है, जिससे अवसरों और चिंताओं का मिश्रण पैदा हो रहा है। वरिष्ठ स्क्रीन समय का उदय युद्ध वयस्कों के बीच प्रौद्योगिकी का उपयोग तेजी से बढ़ गया है। प्यूर रिसर्च के आंकड़ों से पता चलता है कि पिछले दो दशकों में इंटरनेट का उपयोग करने वाले 65 वर्ष और उससे अधिक आयु के वयस्कों की संख्या नाटकीय रूप से बढ़ गई है। इस प्रवृत्ति को चलाते वाले प्रमुख आंकड़े सम्मोहक हैं: उच्च मीडिया खपत: पुराने अमेरिकियों (65+) को स्क्रीन के सामने अपने गैर-कार्यसमय का एक महत्वपूर्ण हिस्सा खर्च करने की सूचना दी गई है। जबकि पारंपरिक टीवी देखना सबसे बड़ा घटक बना आ रहा है, स्मार्टफोन, टैबलेट और कंप्यूटर पर बिताया गया समय



बढ़ रहा है। स्मार्टफोन अपनाना: वरिष्ठ नागरिकों के बीच स्मार्टफोन स्वामित्व अब आम है, कुछ साल पहले की तुलना में काफी वृद्धि हुई है। प्रेरणा: यह बदलाव कारकों के मिश्रण से प्रेरित है: अकेलापन, पहुंच की आसानी, और परिवार और दुनिया के साथ जुड़े रहने की इच्छा। कई लोग तनाव से राहत, मनोरंजन और बहुत अधिक खाली समय के लिए एक मुकाबला तंत्र की तलाश कर रहे हैं। द डुअल एज: फायदे और नुकसान वरिष्ठ नागरिकों के लिए बढ़ता स्क्रीन समय एक दोधारी तलवार है, जो नए जोखिम पेश करते हुए महत्वपूर्ण लाभ प्रदान करता है। डिजिटल विभाजन को पाटना: आगे का रास्ता जोखिमों को कम करते हुए प्रौद्योगिकी की सशक्तिकरण क्षमता का दोहन करने के लिए, डिजिटल समावेशन पर केंद्रित प्रयास आवश्यक हैं सरलीकृत डिजाइन: प्रौद्योगिकी कंपनियों को उपयोगकर्ता के अनुकूल

इंटरफेस, बड़े पाठ और आवाज-सक्रिय नियंत्रणों को प्राथमिकता देनी चाहिए। डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम: रोगी, हाथों पर प्रशिक्षण प्रदान करने वाले समुदाय-आधारित कार्यक्रम वरिष्ठों के आत्मविश्वास को बढ़ावा देने, अकेलापन कम करने और उनके स्व-मूल्यांकित स्वास्थ्य में सुधार करने के लिए दिखाया गया है। परिवार का समर्थन: प्रियजन तकनीकी सहायता प्रदान करने, डिजिटल कल्याण की जांच करने और ऑन-स्क्रीन और ऑफ-स्क्रीन गतिविधियों के संतुलन को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वरिष्ठ स्क्रीन समय में वृद्धि इस तथ्य का प्रमाण है कि कनेक्शन, सीखने और सगाई की इच्छा उम्र के साथ कम नहीं होती है। इस पीढ़ी के लिए, स्क्रीन एक बाधा नहीं है बल्कि दुनिया की एक जीवंत डिजिटली है, जो स्वतंत्र और अच्छी तरह से जुड़े जीवन की तलाश में एक आवश्यक

उपकरण है। एक नई तरह की कंपनी कई वरिष्ठों के लिए, स्मार्टफोन एक निरंतर साथी बन गए हैं। बदलती पारिवारिक संरचनाओं, काम के लिए दूर जाने वाले बच्चों और अकेले बिताने गए लंबे घंटों के साथ, स्क्रीन एक शून्य को भर देती है। यूट्यूब भजन, व्हाट्सएप फॉरवर्ड्स, समाचार वीडियो, स्वास्थ्य टिप्स, सीरियल रीकेप्स और ऑनलाइन शॉपिंग—सब कुछ सिर्फ एक टैप दूर है। जो एक शौक के रूप में शुरू होता है वह धीरे-धीरे आदत बन जाता है, और अंततः, निर्भरता।

सूचना देने का भ्रम कई वरिष्ठ लोग स्मार्टफोन से सशक्त महसूस करते हैं। हर संदेश महत्वपूर्ण लगता है, हर ब्रेकिंग-न्यूज अलर्ट जरूरी लगता है। व्हाट्सएप पर आगे की संस्कृति 10 अपडेट किए गए और सामाजिक रूप से जुड़े होने का भ्रम पैदा करती है लेकिन यह निरंतर डिजिटल शोर भी भ्रम, गलत सूचना और अनावश्यक चिंता लाता है विशेष रूप से जब स्वास्थ्य, अपराध या राजनीति के बारे में अग्रिम मूल्य पर लिया जाता है। स्वास्थ्य दंत पर स्क्रीन की लत केवल युवा समस्या नहीं है। बुजुर्गों में, इसका प्रभाव अधिक गहरा हो सकता है। लंबे समय तक देखने के कारण आंखों में खिंचाव और सिरदर्द देर रात स्क्रॉलिंग के कारण बाधित नींद चक्र गलत मुद्रा से गर्दन और पीठ में दर्द मानसिक थकान और चिड़चिड़ापन



संपादकीय

चिंतन-मगन

कम वास्तविक जीवन बातचीत, जो इसे कम करने के बजाय अकेलापन बढ़ाता है विडंबना यह है कि जिस डिवाइस को कनेक्ट करने के लिए बनाया गया था, वह अक्सर उन्हें परिवार और दैनिक दिनचर्या से अलग कर देता है।

दैनिक खुशियों पर डिजिटल निर्भरता कई वरिष्ठ लोग सुबह की सैर छोड़ना शुरू कर देते हैं, भोजन में देरी करते हैं, या उन शौकों को अनदेखा करते हैं जिन्हें वे एक बार प्यार करते थे। बागवानी गेमिंग के लिए रास्ता देती है, समाचार पत्रों को पढ़ना सनसनीखेज समाचार क्लिप देखने से बदल जाता है; पड़ोसियों के साथ चैट करना व्हाट्सएप चैट्स में पीछे की सीट लेता है। डिजिटल दुनिया के विस्तार के रूप में वास्तविक दुनिया धीरे-धीरे सिकुड़ती है। भावनात्मक कोण गहरी सच्चाई यह है: स्क्रीन व्यसनकारी नहीं हैं—आसमानता है। फोन एक शरणस्थल बन जाता है, एक ऐसी जगह जहां वे महसूस करते हैं कि उन्हें देखा, सुना और कब्जा कर लिया गया। लेकिन डिजिटल सगाई पर यह भावनात्मक निर्भरता उनके और उनके परिवारों के बीच एक अदृश्य दीवार बनाती है। अंतर को पाटना बहुत अधिक मोबाइल उपयोग के लिए

वरिष्ठों को दोषी ठहराने के बजाय, परिवार को एक और दयालु दृष्टिकोण विकसित करने की आवश्यकता है। उनके साथ छोटें, सार्थक तरीकों से समय बिताने उन्हें संतुलित स्क्रीन आदतों से परिचित कराएं। उन्हें ऑफलाइन गतिविधियों का पता लगाने में मदद करें: सुबह की सैर, योग, पढ़ने के समूह, या सामुदायिक सभाएं। घर पर डिवाइस-मुक्त घंटों को प्रोत्साहित करें। उन्हें फर्जी खबरों की पहचान करने और भ्रामक फॉरवर्ड से बचने के लिए सिखाएं। फॉरवर्ड से बचने के लिए सिखाएं। वरिष्ठ नागरिक डिजिटल सशक्तिकरण के हकदार हैं, लेकिन अपने स्वास्थ्य, रिश्तों या मन की शांति की कीमत पर नहीं। इसका उद्देश्य उनके जीवन से प्रौद्योगिकी को हटाना नहीं होना चाहिए, बल्कि उन्हें बुद्धिमानी और खुशी के साथ उपयोग करने में मदद करना चाहिए। जैसा कि समाज बच्चों के स्क्रीन समय पर बहस करता है, शायद यह हमारे घरों में चुपचाप उभरते हुए एक और प्रश्न को नोटिस करने का समय है। सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक संभवकर प्रख्यात शिक्षाविद स्ट्रीट कुर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

दोहरेपन का दंश

डॉ. विजय गर्ग

ऐसा नहीं है कि समाज में नागरिक चेतना का नितांत अभाव है। अनेक लोग चेतना से लैस तो हैं, लेकिन अभी वह चेतना विकास के क्रम में ही है। वह जिस वक्त पूर्ण चेतना बनेगी, तो अनेक समस्याएं अपने आप खत्म हो जाएंगी। जैसे अपनी कार में यात्रा कर रहे कुछ लोग केलें या संतरे आदि खाने के बाद चलती कार से छिलके बाहर सड़क पर फेंक देते हैं। उनमें इतनी चेतना तो है कि अपनी कार के भीतर गंदगी नहीं करनी है। यह उनकी अर्ध चेतना है। पूर्ण चेतना होती कि वे छिलके को संभाल कर रखते और कार के बाहर उतरकर किसी कुड़ेदान में फेंकते। मगर अनेक लोग ऐसा नहीं करते हैं। यह भी है कि अपनी कार के भीतर तो लोग कचरा नहीं फेंकेगे, लेकिन अगर बस या ट्रेन में हैं, तो जहां बैठे हैं, वहीं छिलका या कचरा फेंक देने में संकोच नहीं करेंगे। सफाई के प्रति लापरवाही करते हुए वे यह समझ ही नहीं पाते कि उनकी इस हरकत से गंदगी फैलेगी। उनके केलें के छिलके पर किसी का पैर पड़ा, तो वह गिर भी सकता है। यह भी अनुभव में आया होगा कि सार्वजनिक जगह में अगर किसी को आप गंदगी करते हुए देखें और टोक दें, तो उसे बुरा लगता है। उसे रती भर यह बोध नहीं होता कि उसने कोई गलती की है। लोग औपचारिकता के लिए भी 'सारी' नहीं बोलते या माफ़ी नहीं मांगते, उन्टे सामने वाले पर भड़क कर यह कहने लगते हैं कि मुझे मत सिखाएं कि क्या करना है, क्या नहीं करना। ऐसे नहीं कि भड़कने का काम कोई अनपढ़ व्यक्ति करता हो। सूट-बूट पहने व्यक्ति भी कई बार भड़क जाते हैं। ऐसे अनेक लोग समय-समय पर इशर-उधर देखे जा सकते हैं। जिस नदी को लोग

श्रद्धा के साथ प्रणाम करते हैं, उसी नदी में कुछ देर बाद ही साथ लाया हुआ कचरा बहा देते हैं। अगर ऐसे लोगों को भी टोक दिया जाए, तो वे खेद व्यक्त नहीं करते, बल्कि घूर कर देखते हैं। गोया टोकने वाले ने बहुत बड़ा गुनाह कर दिया हो। धर्मस्थलों पर लोग भावपूर्ण तरीके से ईश्वर को प्रणाम करते हैं और बाहर निकलते ही किसी भी व्यक्ति को या तो गठने की कोशिश करते हैं या फिर मंदिर में चढ़ावे के नाम पर अपने पास रखा हुआ सबसे छोटा-पुराना नोट दान-पेटी में डाल देते हैं। ये सब छोटो-छोटो बातें हैं, लेकिन इससे मनुष्य के व्यक्तित्व का पता चलता है कि वह कितना चेतन है। वह कैसा नागरिक है। चेतनावान है या चेतनाशून्य है। चेतनावान व्यक्ति हर जगह सावधान रहेगा। वह अपने नागरिक होने की जिम्मेदारी को समझ कर व्यवहार करेगा। यह भी अनुभव में आया कि अपने देश में गैरजिम्मेदारी के साथ रहने वाला व्यक्ति किसी अनुशासित देश में जाकर बड़ी सभ्यता से पेश आता है, क्योंकि वह वहां फौरन दंडित हो सकता है। इसलिए वह कचरे को निर्धारित जगह ही फेंकता है। कहीं भी थूकता नहीं है। वह जहां कहीं जाएगा, अनुशासित व्यवहार करेगा, लेकिन जैसे ही अपना देश में पहुंचेगा, सारा अनुशासन भूल जाएगा और एक गैरजिम्मेदार नागरिक की तरह आचरण करने लगेगा। कुछ पैसे बचाने के लिए वह फुटपाथ के किनारे छोटा-मोटा व्यवसाय करने वाले दुकानदार को भीतर प्रसन्न हो जाते हैं। यही व्यक्ति जब किसी दूसरे के लिए लड़ जाएगा, लेकिन वही व्यक्ति जब किसी व्यावसायिक परिषद या माल में जाएगा, तो महंगी से महंगी वस्तु खरीदने के बावजूद किसी किस्म का मोलभाव नहीं करेगा। कहेगा ही नहीं कि कुछ कम कर दीजिए, क्योंकि वहां उसे अपनी हैसियत का दिखावा करना है। उसको अपनी रईसी का प्रदर्शन

करना है। यह दोहरा चरित्र मध्यवर्गीय समाज के अनेक लोगों में अक्सर देखा जाता है। इस तरह के कुछ लोग गरीबों से बहस करते हैं, उनका हक मारने की कोशिश करते हैं, मगर किसी महंगी दुकान में जाकर लुट जाने से भी परहेज नहीं करते। अपना फटा-पुराना नोट किसी बैंक में जमा करने के बजाय कुछ लोग अंधेरे का फायदा उठाकर फुटपाथ पर बैठे दुकानदारों को थमा कर चुपचाप खिसक जाते हैं। इसके पीछे व्यक्ति के भीतर कौन-सी छिपी ग्रंथि काम कर रही होती है? मजे की बात यह है कि ऐसे लोग अपनी चालाकी पर बड़े खुश भी होते हैं। घर आकर परिवार के सदस्यों के बीच शान से बताते हैं कि आज मैंने अपना पटा हुआ नोट चला लिया, लेकिन ऐसा करके वे यह भूल जाते हैं कि उनके घर का छोटा बच्चा अनजाने में ही ठगी का एक पाठ सीख रहा है। और उस पाठ को वह स्कूल में, फिर कालेज में, समाज में और फिर अपने घर में भी अमल में लाना शुरू कर देता है। इस तरह व्यक्ति अपनी मूर्खता के कारण समाज में एक नया टग पैदा कर देता है। अगर वह नागरिक चेतना से संपन्न होता, तो अपनी गलती को अपने तक ही सीमित रखता। उसको सार्वजनिक नहीं करता। अपनी गलती पर वह मन ही मन शर्मिंदा भी होता। अपराधबोध से ग्रस्त हो जाता कि मुझे किसी को ठगना नहीं चाहिए, लेकिन ऐसा होता नहीं है। कुछ लोग मौका पाकर किसी को ठगने की कोशिश करते हैं और प्रसन्न हो जाते हैं। यही व्यक्ति जब किसी दूसरे से ठगा जाता है, तो भड़क जाता है और लोगों से कहता है कि देखो, समाज का कैसा पतन हो रहा है। अपने ठगे जाने पर लोग उर्तेजित हो जाते। लेकिन वही व्यवहार जब वे दूसरे के साथ करते हैं तो उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

पौधों से भी मिलेंगे रेयर अर्थ मेटल



आप को यह बात चौंका सकती है कि कुछ पौधे खनिजों का दोहन भी कर सकते हैं। विज्ञानियों ने एक फर्न पौधे के ऊतक में छिपी एक जबरदस्त क्षमता की खोज की है। ब्लेचनम ओरिपेटेल नामक यह पौधा अत्यंत मूल्यवान रेयर अर्थ तत्वों को इकट्ठा कर सकता है। उनके अध्ययन के नतीजों से उन खनिज संसाधनों को इकट्ठा करने का एक ज्यादा टिकाऊ तरीका मिल सकता है, जिन पर हम तेजी से निर्भर होते जा रहे हैं। विश्व में कुल 17 रेयर अर्थ तत्व पाए जाते हैं, और ये फदायें अब हर तरह की टेक्नोलॉजी में गहराई से शामिल हो गए हैं। विंड टर्बाइन, कंप्यूटर, ब्राउजिंग केबल और मॉडकल इंस्ट्रूमेंट सहित अनेक उपकरणों में रेयर अर्थ तत्वों की जरूरत होती है। ये तत्व असल में इतने दुर्लभ नहीं हैं, लेकिन उन्हें धरती की पपड़ी से उपयोग के लिए निकालना बहुत मुश्किल है और उनका खनन महंगा है। खनन की दिक्कत को देख कर विज्ञानियों का ध्यान ऐसे पौधों की तरफ गया जो ज्यादा धातुमय मिट्टी में

उग सकते हैं और धातुओं से जुड़ सकते हैं। इस तरह के पौधों को हाइपरएक्यूमुलेटर कहा जाता है। इस तरह के पौधे मिट्टी से खनिज संसाधन निकालने में मदद कर सकते हैं। इस तरह के खनन को फाइटोमाइनिंग कहा जाता है। चीनी विज्ञान अकादमी के भूविज्ञानी लिउचिंग हु और उनके साथियों ने अपने शोध पत्र में लिखा है कि रेयर अर्थ तत्व स्वच्छ ऊर्जा और हाई-टेक एप्लीकेशन के लिए अनिवार्य धातु हैं, फिर भी ऐसे तत्वों की आपूर्ति को पर्यावरणीय और भू-राजनीतिक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। फाइटोमाइनिंग मिट्टी से धातु निकालने के लिए पौधों का इस्तेमाल करने वाली एक पर्यावरण-अनुकूल रणनीति है, जो रेयर अर्थ तत्वों की टिकाऊ आपूर्ति का भरोसा दिलाती है, लेकिन अभी इस पर बहुत कम रिसर्च की गई है। ब्लेचनम ओरिपेटेल फर्न पहले से ही मिट्टी से खनिज खींचने वाले पौधे के रूप में जाना जाता था। शोधकर्ताओं ने शक्तिशाली माइक्रोस्कोपिक इमॉर्जिज

और रासायनिक विश्लेषण के जरिए देखा कि रेयर अर्थ तत्वों से भरपूर मोनाजाइट यौगिक पौधे के अपने ऊतक के अंदर एक 'केमिकल गार्डन' के रूप में जमा हो रहे हैं। पौधों की फाइटोमाइनिंग की क्षमता के बारे में यह एक आरंभिक अध्ययन है, लेकिन यह क्षमता अनुमान से कहीं ज्यादा हो सकती है। अभी कम से कम एक पौधा सामान्य परिस्थितियों में रेयर अर्थ खनिज बना रहा है। इसके लिए उसे ज्यादा गर्मी और बावधान की जरूरत नहीं पड़ती जो आम तौर पर जमीन के नीचे खनिज निर्माण के लिए जरूरी होते हैं। यह खोज हल्की परिस्थिति में मोनाजाइट के खनिजीकरण के लिए एक दूसरा रास्ता दिखाती है। आगे की रिसर्च से यह पता लगाने में मदद मिलेगी कि क्या यह प्रक्रिया सिर्फ ब्लेचनम ओरिपेटेल फर्न तक सीमित है, या इसे दूसरे पौधों में भी देखने की उम्मीद की जा सकती है। डॉ. विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

वेडिंग सीजन शहनाइयों की गूंज, बाजार की रौनक.....

डॉ. विजय गर्ग

देश में वेडिंग सीजन का आगाज हो चुका है। देवउठनी एकादशी से शुरू हुआ यह उत्सव 15 दिसंबर तक जारी रहेगा। एक रिपोर्ट के मुताबिक, इस दौरान भारत में करीब 46 लाख शादियां होंगी जिनमें लगभग 6.5 लाख करोड़ रुपये का व्यापार होगा। इस खर्च का बड़ा हिस्सा खानपान, कैटरिंग व ज्वेलरी खरीद में जाता है, साथ ही छोटे व्यवसायियों व मेहनतकश लोगों तक पहुंचता है। शहनाइयों के साथ तकनीकी का भी बोलबाला है। दरअसल भारतीय शादियां सिर्फ दो रूहों का मिलन नहीं, बल्कि भारतीय अर्थव्यवस्था में सालाना 'बूस्टर डोज' हैं। नवंबर की हल्की सर्द सर्दों, हवा में घुलती धुंध और दूर कहीं से आती ब्रस बैंड की तेज आवाज। अगर आप भारत के किसी भी शहर, कस्बे या गांव में रहते हैं, तो पिछले कुछ दिनों में आपने महसूस किया होगा कि हवा का रुख बदल गया है। सड़कें जाम हैं, बाजारों में पैर रखने की जगह नहीं, और रात के सन्नाटे में डीजे का शोर अक्सर नींद में खलल डाल रहा है। पहली नजर में यह सब अराजक लग सकता है। ट्रैफिक में फंसा एक आम आदमी इसे 'परेशानी' का नाम दे सकता है। लेकिन अगर आप थोड़ा गौर से उस शोर को सुनें, तो उसमें एक उम्मीद की धुन सुनाई देगी। यह धुन है— भारतीय अर्थव्यवस्था के पहियों के घूमने की। भारत में 'द ग्रेट इंडियन वेडिंग सीजन' का आगाज हो चुका है। देवउठनी एकादशी के साथ ही शुरू हुआ यह उत्सव 15 दिसंबर तक पूरी रफ्तार पर रहेगा। लेकिन इस साल यह शोर थोड़ा अलग है, थोड़ा ज्यादा है। यह सिर्फ दो दिलों या दो परिवारों का मिलन नहीं रह गया; यह मंदी की आहटों के बीच भारतीय बाजार का सबसे बड़ा 'सेलिब्रेशन' बन गया है। तो आज दूल्हे की शेरवानी के रंग या दुल्हन के गहनों की चमक पर बात नहीं करेंगे, बल्कि उस अर्थशास्त्र, उस तकनीक और उस बदलते सामाजिक ताने-बाने की

पड़ताल करेंगे जो इन शामियां के पीछे छिपा है। जब पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्थाएं सहमी हुई हैं, बड़े-बड़े देश 'रिसेशन' शब्द से कांप रहे हैं, तब भारत अपनी मस्ती में डूब रहा है। 'कम्पेन्डेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स' (केट) ने हाल ही में जो रिपोर्ट जारी की है, वह किसी भी अर्थशास्त्री को सोचने पर मजबूर कर दे। एक रिपोर्ट के मुताबिक, एक नवंबर से 15 दिसंबर के बीच भारत में करीब 46 लाख शादियां होने का अनुमान है। अगर हम इसे पिछले साल के आंकड़ों से तुलना करें, तो यह एक बड़ी छलंग है। लेकिन असली कहानी इन शादियों की संख्या में नहीं, बल्कि उन पर होने वाले खर्च में है। अनुमान है कि इन 46 लाख शादियों में करीब 6.5 लाख करोड़ रुपये का व्यापार होगा। जरा इस आंकड़े को गहराई से समझें। यह रकम दुनिया के कई छोटे देशों की कुल जीडीपी से भी ज्यादा है। इतनी बड़ी रकम के इतने सारे शादियों के सालाना बजट को भी पीछे छोड़ देती है। यह प्रमाण है कि भारतीय समाज में 'उपभोग' की भूख अभी शांत नहीं हुई। महंगाई और मंदी की तमाम खबरों के बीच, भारतीय परिवार अपनी परंपराओं और खुशियों पर खर्च करने में कोई कोताही नहीं बरत रहे। अक्सर जब हम 'बिंग फेट इंडियन वेडिंग' की बात करते हैं, तो हमारी आंखों के सामने फाइव-स्टार होटल, विदेशी फूल और महंगी गाड़ियां आती हैं। लगता है कि यह पैसा अमीरों की जेब से निकलकर अमीरों की जेब में ही जा रहा है। लेकिन हकीकत इससे अलग और सुखद है। शादियों का यह अर्थशास्त्र असल में धन के वितरण का बेहतरीन उदाहरण है। जब एक मध्यमवर्गीय पिता अपनी बेटी की शादी के लिए बैंक से पैसा जीवनभर की जमापुर्तियां निकालता है, तो वह उसी समाज की नसों में दौड़ने लगता है। 'केट' का डेटा बताता है, कुल खर्च का एक बड़ा हिस्सा, करीब 10 प्रतिशत, खानपान और कैटरिंग पर व्यय होता है। करीब 15 प्रतिशत हिस्सा ज्वेलरी में



खरीद में जाता है। लेकिन जरा ध्यान दीजिये उन 'अदृश्य हाथों' की तरफ जो इस उत्सव को संभव बनाते हैं। जरा उस टेंट लगाने वाले मजदूर के बारे में सोचिए जो बांस और रस्सियों के सहारे शामियाना खड़ा करता है। उस बिजली वाले के बारे सोचिए जो झालरें लगाता है। उस फूल वाले के बारे में, उस नाई, उस धोबी, उस रिक्शा चालक, उस स्थानीय पेंटिंग जॉ के बारे में सोचिए। एक और उस शादी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से 50 से 100 लोगों को रोजगार देती है। ये वो 'असंगठित क्षेत्र' है, जिसकी कमाई का कोई फिक्स्ड जरिया नहीं होता। उनके लिए यह वेडिंग सीजन किसी दिवाली से कम नहीं है। इन 46 लाख शादियों का मतलब है करोड़ों 'मानव-दिवस' रोजगार। यह पैसा जब इन मेहनतकश लोगों की जेब में पहुंचता है, तो वे राशन खरीदते हैं, कपड़े खरीदते हैं, और अर्थव्यवस्था का चक्र घुमता रहता है। अगर आप पिछले एक दशक में किसी शादी में नहीं गए हैं और अब अचानक किसी समारोह में पहुंच जाएं, तो शायद आप चीक जाएंगे। भारतीय शादियां अब वैसी नहीं रहें, जैसी 90 के दशक में हुआ करती थीं। अब यहां रस्मों के साथ-साथ 'टेक्नोलॉजी' का भी बोलबाला है। वेडिंग इंडस्ट्री ने तकनीकी बदलाव को बाईं फेलाकर स्वीकार किया है।

एआई और डिजिटल कुंडली: बात अब सिर्फ पंडित जी की पोथी तक सीमित नहीं है। आज आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डेटा एनालिटिक्स का इस्तेमाल मैच-मेकिंग से लेकर गेस्ट लिस्ट मैनेज करने तक में हो रहा है। कौन सा मेहमान क्या खाना पसंद करेगा, किसे कहां बैठाना है— सब ऐप्स के जरिए तय हो रहा है। दूना और सिनेमेटोग्राफी: पहले शादी की एल्बम एक दस्तावेज होती थी, अब शादी की फिल्म एक 'ब्लॉकबस्टर' होती है। दूना अब स्टेटस सिंबल नहीं, बल्कि जरूरत है। प्री-वेडिंग शूट्स का बाजार इतना बड़ा कि इसने पर्यटन स्थलों पर फोटोग्राफर्स और मेकअप आर्टिस्ट्स के लिए एक नई इंडस्ट्री खड़ी कर दी। सोशल मीडिया का 'दबाव' और 'बाजार': आज की पीढ़ी के लिए, अगर शादी इंटोग्राम पर फोटोग्राफर्स और मेकअप आर्टिस्ट्स के लिए एक नई इंडस्ट्री खड़ी कर दी। सोशल मीडिया का 'दबाव' और 'बाजार': आज की पीढ़ी के लिए, अगर शादी इंटोग्राम पर फोटोग्राफर्स और मेकअप आर्टिस्ट्स के लिए एक नई इंडस्ट्री खड़ी कर दी। सोशल मीडिया का 'दबाव' और 'बाजार': आज की पीढ़ी के लिए, अगर शादी इंटोग्राम पर फोटोग्राफर्स और मेकअप आर्टिस्ट्स के लिए एक नई इंडस्ट्री खड़ी कर दी।

हमल्वपूर्ण बदलाव दिख रहा है, जो सीधे देशहित से जुड़ा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कुछ समय पहले वेडिंग इन भारत का आह्वान किया था। लगता है देश के संभ्रांत वर्ग ने इस अपील को गंभीरता से लिया। कुछ साल पहले तक, इटली का लोक कोमो या तुर्की के रिसॉर्ट्स भारतीय अमीरों की पहली पसंद थे। करोड़ों रुपये की विदेशी मुद्रा इन डेस्टिनेशन वेडिंग्स के नाम पर देश से बाहर जा रही थी। लेकिन इस साल रूढ़ान बदला है। उदयपुर, जोधपुर, जयपुर, केरल और गोवा जैसे भारतीय स्थलों की मांग में जबरदस्त उछाल आया। जब एक बड़ी डेस्टिनेशन वेडिंग भारत में होती है, तो उसका फायदा हमारे होटल उद्योग व एयरलाइंस को मिलता है, और हस्तशिल्पियों को मिलता है। यह 'रिवर्स ड्रेन ऑफ वेल्थ' रोकने का माध्यम बन रहा है। इसके साथ ही, 'वोकल फॉर लोकल' का असर भी दिख रहा है। बाजारों से चीनी लाइट और सस्ते प्लास्टिक फूल धीरे-धीरे गायब हो रहे हैं। उनकी जगह स्थानीय कारीगरों द्वारा बनाए मिट्टी के दीये, गंदे के फूलों और भारतीय कपड़ों ने ले ली। हम जड़ों की ओर लौट रहे, और हमारी जड़ें हमारे बाजार को सींच रही हैं। अगर भारत शादियों का देश है, तो दिल्ली उसकी राजधानी। 'केट' की रिपोर्ट विशेष रूप से दिल्ली को इस पूरी आर्थिक गतिविधि का केंद्र बिंदु मानती है। अकेले दिल्ली में इस सीजन में करीब 4.8 लाख शादियां होने का अनुमान है। दिल्ली के बाजारों-चौदनी चौक से लेकर लाजपत नगर, साउथ एक्स से छोटे-मोटे बाजारों तक—में करीब 1.8 लाख करोड़ रुपये का कारोबार होने की उम्मीद है। वहां झुग्गी बस्तियों से लेकर पाँश कॉलोनीयों तक, हर जगह शहनाई बज रही है। बजट अलग हो सकता है, लेकिन जज्बा वही। अक्सर जेहन में यह सवाल उठता है— आखिर हम भारतीयों के लिए शादियों को भव्य बनाना इतना

जरूरी क्यों है? क्यों एक पिता 20 साल तक अपनी जरूरतें मारकर बचत करता है, ताकि वह 2 दिन की दावत में उसे खर्च कर सके? पश्चिमी अर्थशास्त्री इसे 'तर्कहीन' मान सकते हैं, संसाधनों की बर्बादी कह सकते हैं। लेकिन भारतीय संदर्भ में, यह खर्च सिर्फ उपभोग नहीं, बल्कि 'सामाजिक निवेश' है। रिस्ते मजबूत करने, सामाजिक दायरा बढ़ाने और अपनी सांस्कृतिक विरासत अगली पीढ़ी को सौंपने का तरीका है। मजे की बात यह कि यही 'भावनात्मक खर्च' हमारी अर्थव्यवस्था को मंदी के झटकों से बचाता है। जब पश्चिम के लोग मंदी के डर से पैसा तिजोरों में बंद कर देते हैं, तब भारतीय लोग शुभ मुहूर्त देखकर बाजार में निकल पड़ते हैं। हमारी अर्थव्यवस्था तर्कों से ज्यादा भावनाओं पर चलती है। और शादियां उस भावना का सबसे बड़ा उत्सव हैं। अगले कुछ हफ्तों तक, जब आप रात को बैंड-बाजे के शोर से परेशान हों, या किसी बारात की वजह से सड़क पर लंबा इंतजार करना पड़े, तो अपना नजरिया थोड़ा बदलिएगा। शोर में झुंझलाहट की जगह संगत तलाशिएगा। सोचिए कि वह बैंड वाला, जो शायद कल तक बेरोजगार था, आज अपने परिवार के लिए रोटी कमा रहा है। उस सड़क पर रंगती गाड़ियों में जो पेट्रोल जल रहा है, वह राजस्व बढ़ा रहा है। आतिशबाजी का धुआं भले ही पर्यावरण के लिए चिंता का विषय हो, लेकिन वह शिवकाशी के किसी मजदूर के घर का चूल्हा जला रहा है। 6.5 लाख करोड़ रुपये का यह प्रवाह बाजार की बंद नसों को खोल रहा है। पैसा एक हाथ से दूसरे हाथ, और दूसरे से तीसरे हाथ में जा रहा है। यही तो अर्थव्यवस्था है। भारतीय शादियां सिर्फ दो रूहों का मिलन नहीं हैं, बल्कि यह भारतीय अर्थव्यवस्था मजबूत करने वाला सालाना 'बूस्टर डोज' है। यह उत्सव है, व्यापार है, और सबसे बढ़कर—यह भारत है। शहनाइयां गूंजती रहें, और बाजार की रौनक बनी रहे। सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

बाबुओं के हाथ में शासन: RMC में अफसर राज, सेवाओं से वंचित जनता - प्रदेश अध्यक्ष, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (ओड़िशा)

RMC में चुने हुए जनप्रतिनिधि न होने के कारण शहरवासियों का भाग्य प्रशासनिक अधिकारियों के हाथ में है। अदालत में मुकदमा लंबित रहने के कारण चुनाव नहीं हो पा रहा, जिससे आम जनता अपने अधिकारों से वंचित है।

परिवहन विशेष न्यूज

राउरकेला: राउरकेला को 14 नवंबर 2014 को महानगर निगम का दर्जा मिला था। इसके बाद वार्डों की संख्या 31 से बढ़ाकर 40 कर दी गई। शहरवासी इससे बेहतर बुनियादी सुविधाएँ और सेवाएँ मिलने की उम्मीद कर रहे थे। लेकिन 12 वर्ष बीत जाने के बाद भी यह उम्मीद अधूरी है। इसका मुख्य कारण है—महानगर निगम का चुनाव न होना।

निगम कार्यालय में चुने हुए जनप्रतिनिधि न होने

से शहर का पूरा नियंत्रण प्रशासनिक अधिकारियों के हाथ में है। अदालत में मामला लंबित होने के कारण चुनाव नहीं हो पा रहा और आम जनता अपने अधिकारों से वंचित हो रही है।

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष के अनुसार—शहरवासियों ने आखिरी बार 2008 में अपने प्रतिनिधि चुने थे। तत्कालीन नगरपालिका का कार्यकाल अगस्त 2013 में समाप्त हुआ था। लगभग एक वर्ष बाद राउरकेला को महानगर निगम घोषित किया गया। इसके बाद 12 साल से अधिक समय हो गया, लेकिन राज्य सरकार चुनाव कराने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठा सकी। चुनाव कराने हेतु शीघ्र ही जरूरी कदम उठाये जाएँ।

महानगर निगम की घोषणा के बाद शहर से सटे जगदा और झाड़तारंग पंचायत के कुछ क्षेत्रों को निगम में शामिल किया गया था। इस विलय का कुछ आदिवासी संगठनों ने विरोध किया और उच्च



न्यायालय में याचिका दायर की। परिणामस्वरूप मार्च 2015 में उच्च न्यायालय ने इस पर स्थगनादेश जारी किया। इसके बावजूद निगम के वार्डों की संख्या 40 कर दी गई।

डॉ यादव ने कहा—रउधर, 2021 में राउरकेला नगरपालिका के एक पूर्व अध्यक्ष ने चुनाव कराने हेतु ओडिशा उच्च न्यायालय में याचिका दायर की।

अदालत ने तत्कालीन राज्य सरकार को जवाब दखिल करने का निर्देश दिया, लेकिन अब तक सरकार न तो जवाब दे सकी और न ही मामले के निस्तारण के लिए कोई ठोस पहल कर सकी।

पिछले विधानसभा चुनाव में RMC चुनाव प्रमुख मुद्दा बना था। लगभग सभी दलों ने इसे लेकर वोट माँगे। सत्ता बदलने के बाद चुनाव होने की

उम्मीद जगी थी। मार्च महीने में शहरी विकास मंत्री ने छह महीने के भीतर चुनाव कराने की घोषणा भी की थी, लेकिन अब तक कोई प्रगति नहीं हुई है।

चुने हुए प्रतिनिधि न होने से शहरवासियों की समस्याओं का समाधान नहीं हो पा रहा। शहर का जनस्वास्थ्य और स्वच्छता व्यवस्था चरमरा चुकी है। दो साल पहले हैजा संक्रमण से कई लोगों की

मौत इसका उदाहरण है। नियमित कचरा संग्रहण, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, सड़क और नाली सफाई—सब मजबूत बनकर रह गए हैं। पिछले जुलाई में शहर की बस्तियों में जलजमाव ने RMC प्रशासन की पोल खोल दी थी। लोगों का आरोप है कि उनकी माँगे अनसुनी की जा रही हैं और प्रशासनिक अधिकारी मनमानी कर रहे हैं।

राष्ट्रीय जन उद्योग व्यापार संगठन, बिहार

परिवहन विशेष न्यूज

आज राष्ट्रीय जन उद्योग व्यापार संगठन के प्रदेश अध्यक्ष श्री पंकज कुमार ने बिहार सरकार के माननीय उद्योग मंत्री श्री दिलीप जायसवाल जी से महत्वपूर्ण मुलाकात की। मुलाकात के दौरान औद्योगिक विकास और व्यापारी हितों से जुड़े चार प्रमुख बिंदुओं पर गहन चर्चा हुई—

1. DIC व संगठन की संयुक्त टास्क फोर्स का गठन ताकि जमीनी स्तर पर उद्योग एवं व्यापार से संबंधित समस्याओं का त्वरित निराकरण हो सके।
2. 'व्यापारी—उद्योग समस्या समाधान दरबार' का प्रत्येक माह आयोजन जिससे छोटे-बड़े सभी व्यापारियों की समस्याओं का सीधे विभागीय स्तर पर समाधान



सुनिश्चित हो।

3. MSME जागरूकता एवं लाभ वितरण कैंप राज्य के प्रत्येक जिलों में MSME योजनाओं का लाभ वास्तविक पात्रों तक पहुँचाने हेतु विशेष अभियान चलाने पर सहमति बनी।
4. निवेशकों के लिए '72 Hours Industry Clearance Desk' निवेश प्रक्रिया को तेज और

पारदर्शी बनाने हेतु 72 घंटे के भीतर औद्योगिक क्लियरेंस देने की व्यवस्था लागू करने पर सकारात्मक चर्चा हुई। माननीय मंत्री श्री दिलीप जायसवाल जी ने प्रदेश अध्यक्ष श्री पंकज कुमार को आश्वासन दिया कि इन सभी बिंदुओं पर तत्काल कार्रवाई की जाएगी तथा आवश्यक दिशानिर्देश शीघ्र जारी होंगे। उन्होंने यह भी कहा कि राज्य

के सभी जिला उद्योग केंद्रों को निर्देश भेजे जाएंगे कि उद्योग से संबंधित कोई भी फाइल या आवेदन लंबित न रखा जाए और समयबद्ध तरीके से निपटारा किया जाए। राष्ट्रीय जन उद्योग व्यापार संगठन यह विश्वास व्यक्त करता है कि इन कदमों से बिहार में औद्योगिक माहौल और मजबूत होगा तथा व्यापारियों को वास्तविक सहूलियत मिलेगी।

करोड़ों की भू-धांधली विवाद पर हुई संयुक्त सुनवाई सब-कलेक्टर विजय नायक ने दोनों पक्षों की दलीलें सुनी

परिवहन विशेष न्यूज

राउरकेला: लाठीकाटा ब्लॉक के सुईग्रह पंचायत अंतर्गत अग्रुखपाल गौजा में एन एच किनारे करोड़ों की कथित भू-धांधली को लेकर उठे विवाद और सीएम व राज्य मंत्री के हस्तक्षेप पर शुक्रवार की सुबह श्रद्धांजलि बगर सब-कलेक्टर कार्यालय, पानवोष में संयुक्त सुनवाई आयोजित की गई। यह सुनवाई मुख्यमंत्री मोहन गौरी के राउरकेला दौरे के दौरान 14 नवंबर को सुनिश्चिता पुरन एवं गौरीगो द्वारा सीएम गौरीगो सेल में दाख शिकायत के आधार पर तय की गई थी। गौरीगो सेल की पहल पर सब-कलेक्टर कार्यालय ने 28 नवंबर को सुनवाई की तिथि जारी की थी। सब-कलेक्टर विजय नायक की अध्यक्षता में हुई सुनवाई के दौरान शिकायतकर्ता सुनिश्चिता पुरन, पदमा गौरी, अग्रज गुंडारी, श्याम सुंदर मराठी, खानाब पुरन, अश्रम पुरन, अश्रम पुरन, रेव. अग्रिजीत पुरन, दनवासी पुरन, अश्रम पुरन, रेव. अग्रिजीत टोपनो, जम्बू ग्रांगम, सरयव सकारी ग्रांगम, संभान पटनायक, दीन बंधु पसायत सहित कई गौरीगो उपस्थित रहे। उन्होंने आरोप दोस्तों से बताया कि एनएच किनारे स्थित सुनिश्चिता पुरन की 3 एकड़ 11 डिसीमल पट्टक गौरीगो को कथित तौर पर जालसाजी कर किसी अन्य व्यक्ति के नाम पर खरीदकर सा सा का दखल दिखाते हुए बेचा गया और जितन नायक के नाम पर फर्जी पट्टा तैयार किया गया।



इसी दौरान पदमा गौरी ने भी शिकायत दर्ज कराई कि जॉल ब्लॉक स्थित दो डिस्ट्रिक्ट प्लॉट की रैफरेंसी कर किसी और के नाम पट्टा जारी कर दिया गया है। डिस्ट्रिक्ट नेता दीन बंधु पसायत ने दावा किया कि अग्रुखपाल गौजा में करीब 15 एकड़ गौरीगो की अग्रिजित टंग से रैफरेंसी हुई है, जिसके लिए उन्होंने तत्कालीन तहसीलदार शैलन चंद्र नायक को जिम्मेदार ठहराया। वहीं मिडिया से बातचीत के क्रम में राष्ट्रवादी

कांग्रेस पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष ने कहा "ओड़िशा प्रदेश में सुंदरगढ़ जिला एवं सुंदरगढ़ जिले में लाठीकाटा तहसील में अग्रिजितताओं की भंडार है, जहां जंगल, नदी, आदिवासी एवं अन्य किसान किसानों की खरीद बिक्री की गवाही है उनके भी पेट धड़ल्ले से भूमाफियाओं और विभागीय कर्मचारियों की मिलीभगत से बनाये जा रहे हैं" शैलन चंद्र नायक ने अपने ऊपर लगे सभी आरोपों को निराधार और तथ्यों से परे बताया। सुनवाई के दौरान सब-कलेक्टर विजय नायक ने दोनों पक्षों की दलीलें विस्तार से सुनीं। उन्होंने गौरीगो को आवश्यक किफाई सुनिश्चित करी और शिकायतों को शासन स्तर पर भेजकर आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी। सुनवाई के बाद गौरीगो ने गौरीगो से बातचीत में कहा कि मुख्यमंत्री और राज्य मंत्री के हस्तक्षेप से उन्हें न्याय मिलने की नई उम्मीद जगी है।

6 दिसंबर, डॉ. अंबेडकर महापरिनिर्वाण दिवस

बाबूलाल नागा

6 दिसंबर का दिन भारतीय इतिहास में केवल एक तिथि भर नहीं है बल्कि यह उस महामानव की स्मृति का दिन है जिसने सामाजिक असमानता, जाति व्यवस्था और मानव शोषण के विरुद्ध आजीवन संघर्ष किया। यह दिन भारत के संविधान निर्माता, आधुनिक भारत के शिल्पकार, समाज सुधारक, मानवतावादी और क्रांतिकारी चिंतक डॉ. भीमराव अंबेडकर के महापरिनिर्वाण दिवस के रूप में मनाया जाता है। उनका जीवन केवल एक व्यक्ति की जीवनी नहीं बल्कि करोड़ों दलित-वंचित-पीड़ित समाज के संघर्ष, आशा और अधिकारों की कहानी है।

14 अप्रैल 1891 को महू (मध्यप्रदेश) में जन्मे डॉ. अंबेडकर का बचपन अत्यंत कठिन परिस्थितियों में बीता। समाज की उस क्रूर व्यवस्था ने उन्हें स्पर्श तक अछूत समझा, पानी के घड़े तक से हाथ न लगाने दिया परंतु अंबेडकर का व्यक्तित्व उन अपमानों से टूटने वाला नहीं था बल्कि उन अनुभवों ने उनके जीवन को दिशा दी- कि भारत का वास्तविक निर्माण शिक्षा, समान अधिकार और सामाजिक न्याय के बिना संभव नहीं।

डॉ. अंबेडकर ने शिक्षा को सामाजिक मुक्ति का सबसे शक्तिशाली हथियार माना। उनकी उपलब्धियाँ स्वयं में प्रेरणादायक हैं—कोलंबिया विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट, लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से कानून और अर्थशास्त्र की डिग्रियाँ, तथा अनेक विधाओं में शोध, लेखन और चिंतन। वे कहते थे—'शिक्षित बनो, संगठित रहो और संघर्ष करो।' यह संदेश आज भी हर शोषित, वंचित और न्याय के इच्छुक नागरिक के लिए मार्गदर्शन है।

स्वतंत्र भारत के संविधान की रचना में डॉ. अंबेडकर ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने न केवल संविधान लिखा बल्कि उसमें स्वतंत्रता, समानता, बंधुता और न्याय जैसे लोकतांत्रिक मूल्यों को भारतीय समाज की आत्मा बना दिया। उन्होंने भारतीय संविधान को केवल कानून का संग्रह नहीं, बल्कि मानव अधिकारों का घोषणा पत्र बनाया। अनुच्छेद 17 द्वारा अस्पृश्यता का उन्मूलन, शिक्षा और अवसरों में समानता, दलित-वंचित समाज के लिए आरक्षण और लोकतांत्रिक स्वतंत्रता-यह सब अंबेडकर की दूरदृष्टि और सामाजिक न्याय के प्रति समर्पण का परिणाम है। उनके शब्द आज भी प्रेरित करते

हैं—'कानून और व्यवस्था उस समाज के लिए अनिवार्य है, जो प्रगति की राह पर अग्रसर है।'

भारतीय समाज अपने प्रारंभिक काल से ही जातिगत व्यवस्था और भेदभाव की चुनौतियों से जुड़ा आ रहा है। अंबेडकर ने अपने संघर्ष के केंद्र में सामाजिक समानता को रखा और कहा कि कोई राष्ट्र तभी सशक्त बन सकता है जब उसके सभी नागरिक बराबरी के अवसर प्राप्त करें। आज भी समाज में जाति आधारित भेदभाव, लिंग असमानता, आर्थिक विषमता, और सामाजिक बहिष्कार जैसे मुद्दे मौजूद हैं। इनमें सुधार लाने के लिए अंबेडकर के विचार स्पष्ट मार्गदर्शन देते हैं। उनका यह संदेश—'मैं किसी समाज की प्रगति को उस समाज में महिलाओं द्वारा प्राप्त स्थिति से मापता हूँ' आज भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। लिंग आधारित हिंसा, असमान वेतन, और महिलाओं के सीमित अधिकारों की चुनौतियाँ बताते हैं कि अंबेडकर की समानता की अवधारणा को लागू करने की आवश्यकता आज भी उतनी ही तीव्र है।

अंबेडकर का मानना था कि कोई समाज तभी महान बन सकता है जब उसमें सभी व्यक्तियों को सम्मान और समान अवसर मिले। उन्होंने जातिवाद, भेदभाव,

छुआछूत और सामाजिक अन्याय के खिलाफ एक विचार आंदोलन खड़ा किया। उनका यह कथन आज भी सामाजिक चिंतन का आधार है—'मनुष्य की पहचान उसके जन्म से नहीं, उसके कर्म और सोच से होती है।' उनका मानवतावादी दृष्टिकोण विश्वस्तरीय था। वे केवल भारत के दलितों की आवाज नहीं थे, बल्कि वैश्विक मानवाधिकार आंदोलन के प्रवर्तक थे।

जीवन के अंतिम चरण में उन्होंने यह महसूस किया कि जातिगत अन्याय केवल सामाजिक समस्या नहीं, बल्कि मनोवैज्ञानिक और धार्मिक सोच का परिणाम है। इसलिए 14 अक्टूबर 1956 को नागपुर में उन्होंने करोड़ों अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म स्वीकार किया। उनका बौद्ध धर्म स्वीकारना केवल आध्यात्मिक कदम नहीं, बल्कि समानता और स्वाभिमान की क्रांति था।

आज भारत तकनीकी रूप से समृद्ध हो रहा है, परंतु सामाजिक असमानता, जातिगत हिंसा, अन्याय और भेदभाव के रूप अब भी मौजूद हैं। ऐसे समय में डॉ. अंबेडकर के विचार और भी अधिक आवश्यक हो जाते हैं। उनकी सोच हमें सिखाती है कि—समाज का विकास तभी संभव है जब सभी को बराबर अधिकार मिलें।

पंजाब के पांच हजार स्कूलों में बनाए जाएंगे पौष्टिक बगीचे:बी.एम.शर्मा



पाईटैक्स में कृषि, पोषण और कल्याण तालमेल विषय पर सम्मेलन का आयोजन

अमृतसर, 5 दिसंबर (साहिल बेरी)

पंजाब स्टेट फूड कमीशन के चेयरमैन बी.एम.शर्मा ने कहा है कि पंजाब सरकार ने स्वास्थ्य के भविष्य को देखते राज्य के पांच हजार 73 स्कूलों में पौष्टिक बगीचों की स्थापना करने का निर्णय लिया है। इस संबंध में पंजाब सरकार द्वारा आदेश जारी किए जा चुके हैं।

शर्मा पीएचडी चैंबर ऑफ कामर्स एंड इंडस्ट्री द्वारा आयोजित किए जा रहे 19वें पंजाब इंटरनेशनल ट्रेड एक्सपो के दौरान आज कृषि, पोषण और कल्याण तालमेल विषय पर आयोजित सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि पंजाब में खाद्य भंडार की कोई कमी नहीं है लेकिन पंजाब वासियों को क्वालिटी फूड देना बड़ी चुनौती है। उन्होंने कहा कि

किसानों को जहां फसली विभिन्नता अपनाने पर जोर दिया जा रहा है वहीं उन स्कूलों को बेहतर भविष्य देने के लिए एक स्कूल का चयन किया गया है जहां खाली जमीन पड़ी है। इसके लिए अध्यापकों को ट्रेनिंग देकर हर्बल गार्डन, फ्रूट गार्डन, वेजीटेबल गार्डन विकसित किए जा रहे हैं। यह फल, सब्जियाँ बच्चों के मिड डे मील का हिस्सा बनेंगी। जिससे उन्हें स्कूल स्तर पर ही क्वालिटी फूड दिया जा सकेगा। शर्मा ने बताया कि राज्य में बहुते से स्कूल तो ऐसे चिन्हित किए गए हैं, जिनके पास तीन से चार एकड़ सरप्लास जमीन पड़ी है। अब इस जमीन पर कृषि विभाग, बागवानी विभाग तथा शिक्षा विभाग के साथ मिलकर पौष्टिक बगीचे बनाए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि प्रदेश में 1100 ऐसे आंगनवाड़ी केंद्र ऐसे हैं, जहां अतिरिक्त जमीन पर पौष्टिक बगीचे बनाए जाएंगे। इससे पहले पीएचडीसीसीआई की फार्मास्यूटिकल, हेल्थ एंड वेलनेस

कमेटी के संयोजक सुप्रीत सिंह ने कहा कि बदलती जीवन शैली में हमें अपने खान पान का विशेष ध्यान रखना होगा। खाने में 20 प्रतिशत टेस्ट और 80 प्रतिशत पौष्टिकता होनी जरूरी है। ग्राफिक्स एरा विश्वविद्यालय के वीसी डॉ. नरपिंदर सिंह ने कहा कि इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य पौष्टिक आहार के प्रति जागरूकता फैलाना है। कार्यक्रम के समापन पर पीएचडीसीसीआई आयुर्वेद, यूनाबी फार्मा कमेटी की संयोजक डॉ.विभा बावा ने आए हुए अतिथियों का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर अपेड़ा के क्षेत्रीय प्रभारी हरप्रीत सिंह, पुरुनानक देव विवेक के डॉ.सिद्धांत बनूरा, अमृतसर कृषि विभाग के चीफ एग्रीकल्चर ऑफिसर डा.गुरसाहिब सिंह, कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक जगमोहन सिंह नागो, राकेश टुकराल, फूड कमीशन के सदस्य विकास दत्त जुनेजा समेत कई गणमान्य मौजूद थे।

टाटा ट्रस्ट के चेयरमैन नोएल टाटा की सौतेली मां सिनोम टाटा का 95 वर्ष में निधन

एक परोपकारी व कारोबारी महिला - जिन्होंने रत्नमेरु को अग्रणी कॉस्मेटिक ब्रांड तैयार कर देश के पश्चिम भाग में सफल स्थापना की

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

जमशेदपुर, टाटा ट्रस्ट के चेयरमैन नोएल टाटा तथा स्व रतन टाटा की मां सिमोन टाटा का शुक्रवार को मुंबई के एक अस्पताल में उम्रदर्राज बीमारी के कारण निधन हो गया। दिवंगत रतन टाटा की सौतेली मां सिमोन टाटा 95 वर्ष की थीं. एक बयान में कहा गया है कि सिमोन टाटा कारोबारी कामकाज और परोपकारी गतिविधियों दोनों से जुड़ी रही थीं. बयान में कहा गया, सिमोन टाटा को लैकमे को भारत के अग्रणी कॉस्मेटिक ब्रांड के रूप में विकसित करने और वेस्टसाइड चेन



के माध्यम से फैशन रिटेल की नींव रखने में योगदान के लिए हमेशा याद किया जाएगा. स्विट्जरलैंड में जन्मी सिमोन ने कई परोपकारी संस्थाओं का मार्गदर्शन भी किया, जिनमें सर रतन टाटा संस्थान शामिल है. बयान में कहा गया है कि सकारात्मक दृष्टिकोण और दृढ़ संकल्प के दम

पर सिमोन ने अपने जीवन में आई कई चुनौतियों का सामना किया. बयान के अनुसार शनिवार सुबह कोलाबा के 'कैथेड्रल ऑफ द होली नेम चर्च' में सिमोन को अंतिम श्रद्धांजलि दी गयी, जिसके बाद पूरवाहन 11 बजे एक प्राथना सभा का आयोजन किया गया।

कब क्या हो जाता है खास...!

राजनीति हैं गंभीर चेहरों लंबे भाषणों से लैस, ढूँढ़ रहे सब अपनी-अपनी कहीं न कहीं स्पेस। विपक्ष में रहकर भी किसी का काम न हो रहा, सतासीन रहकर अपना सब समय में खो रहा।

होती थी यूं डिनर पार्टी मिल जाता है डाइनिंग। वारतुशास्त्र के नाम कई बार करते डिजाइनिंग, नेताओं के घर चमक जाते जबरदस्त शाइनिंग।

संजय एम तराणेकर



देश में तर्क से भी ज्यादा मजबूत अंधविश्वास, न जाने कब-कब क्या-क्या हो जाता है खास। देखों आज भी कहीं पे नारियल जा रहा तोड़ा, किसी दरवाजे पे एक नीबू रखा जा रहा पूरा।

ज्योतिषी भी करते कभी राजनीति में प्लानिंग,